ज्ञान विचार

किसी अच्छे काम की शुरुआत करने के लिए कोई भी वक्त बुरा नही होता है।

PKL NO.KKR/184/2022-24

हिन्दी पाक्षिक राष्ट्रीय समाचार पत्र

सच्ची व स्टीक खबर , आप तक

सम्पादक : जरनैल सिंह

छायाकार : राजरानी

गजब हरियाणा

Contact : 91382-03233

समस्त भारत में एक साथ प्रसारित

HAR/HIN/2018/77311

WWW.GAJABHARYANA.COM ✸ 16 मई 2023 वर्ष : 6, अंक : 04 पृष्ट : 8 मूल्य: 7/- सालाना 150/- रुपये ✸ email. gajabharyananews@gmail.com

प्रेरणास्त्रोत: डॉ. कृपा राम पुनिया IAS(Retd.), पूर्व उद्योग मंत्री हरियाणा सरकार

हार्दिक स्वागत

मार्गदर्शक: डॉ. राज रूप फुलिया, IAS (Retd), पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार तथा वाइस चांसलर, गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार एवं चौधरी देवीलाल यूनिवर्सिटी, सिरसा

मुख्यमंत्री ने की 55 दुर्लभ बिमारियों से ग्रसित मरीजों को आर्थिक सहायता देने की घोषणा

यमुनानगर में मुख्यमंत्री ने 275 बिस्तरों वाले मुकन्द लाल जिला नागरिक अस्पताल का किया उद्घाटन

ऐसे मरीजों को 2750 रुपये प्रति माह दी जाएगी पेंशन, 25 करोड़ रुपये के बजट का किया प्रावधान

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने आज जिला यमुनानगर में 275 बिस्तरों वाले मुकन्द लाल जिला नागरिक अस्पताल सहित 17 जिलों में 46 स्वास्थ्य संस्थानों का उद्घाटन कर उन्हें जनता को समर्पित किया। इन संस्थानों पर लगभग 232 करोड़ रुपये की लागत आई है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि पोम्प रोग, डचेन मस्कुलर डिस्ट्रॉफी (डीएमडी) व स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी (एसएमए) इत्यादि 55 दुर्लभ बिमारियों से ग्रसित मरीजों को सरकार की ओर से आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। इन मरीजों को 2750 रुपये प्रति माह पेंशन दी जाएगी। अभी तक सरकार की ओर से थैलेसिमिया, हीमोफीलिया, कैंसर स्टेज-3 एवं 4 के मरीजों को पेंशन प्रदान की जाती है। आज से 55 दुर्लभ बिमारियों को भी इस सूची में जोड़ दिया गया है और इस आर्थिक सहायता हेतू सरकार ने 25 करोड़ रुपये के बजट का प्रावधान किया है।

मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश में थैलेसिमिया व हीमोफीलिया बिमारी से ग्रसित 3 हजार मरीज, कैंसर स्टेज-3 एवं 4 के 4 हजार मरीज और 55 दुर्लभ बिमारियों के लगभग 1 हजार मरीज हैं, जिन्हें सरकार की ओर से पेंशन स्वरूप आर्थिक मदद दी जाएगी। उन्होंने कहा कि 55 दुर्लभ बिमारियों की सूची स्वास्थ्य् विभाग की वेबसाइट पर चिन्हित करवा दी हैं, इन बीमारियों से ग्रसित व्यक्ति वेबसाइट पर अपने मेडिकल सर्टिफिकेट के साथ रजिस्ट्रेशन करें।

यमुनानगर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में गृह एवं स्वास्थ्यम मंत्री अनिल विज, स्कूल शिक्षा मंत्री कंवर पाल और विधायक घनश्याम अरोड़ा सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे। अन्य जिलों में आयोजित उद्घाटन समारोहों में बतौर मुख्य अतिथि मंत्रीगण और विधायक वर्चुअली इस कार्यक्रम से जुड़े।

95 करोड़ रुपये की लागत से बना यमुनानगर का मुकन्द लाल जिला नागरिक अस्पताल

मुख्यमंत्री ने कहा कि यमुनानगर में आज उद्घाटन किए गए मुकन्द लाल जिला नागरिक अस्पताल पर लगभग 95 करोड़ रुपये की लागत आई है। प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ाने की दिशा में आज का यह कदम निश्चित तौर पर अहम है। भिवानी, करनाल, फतेहाबाद, रोहतक, कैथल, फरीदाबाद, पलवल, सिरसा, पंचकूला, नूहं, चरखी दादरी, जींद, यमुनानगर, हिसार, गुरुग्राम, नारनौल और कुरुक्षेत्र में 46 स्वास्थ्य संस्थानों का उद्घाटन किया गया है। इनमें 1 जिला सिविल अस्पताल, 2 उप मंडल सिविल अस्पताल, 3 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, 1 शहरी स्वास्थ्य केंद्र, 1 मातृ एवं शिशु अस्पताल, 8 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, 15 स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र और 15 उप स्वास्थ्य केंद्र शामिल हैं।

डॉक्टरों, पैरामेडिकल व नर्सिंग स्टाफ को बढ़ाने के लिए सरकार उठा रही कदम

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने के लिए राज्य सरकार हर वर्ष स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए बजट को बढ़ा रही है। इतना ही नहीं, डॉक्टरों की संख्या को बढ़ाने के लिए भी सरकार कदम उठा रही है। डब्ल्यूएचओ के मानदंडों के अनुसार प्रदेश में लगभग 28 हजार डॉक्टर होने चाहिएं, जबकि आज सरकारी व निजी मिलाकर 13 हजार डॉक्टर हैं। वर्ष 2014 में प्रदेश में मात्र 750 एमबीबीएस सीटें थी और हमारी सरकार ने मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस की सीटों की संख्या बढ़ाई और नये मेडिकल कॉलेज खोलने के परिणामस्वरूप आज एमबीबीएस सीटों की संख्या बढकर 1900 हो गई है। इतना ही नहीं, अब 7 मेडिकल कॉलेज या तो निर्माणाधीन है या घोषित किए जा चुके हैं। इनके बनने के बाद एमबीबीएस की संख्या 3 हजार से भी अधिक हो जाएगी। इसके अलावा, पैरामेडिकल स्टाफ और नर्सिंग स्टाफ की संख्या को भी बढ़ा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि पंचकूला में भी एक नया मेडिकल कॉलेज तथा एक आयुर्वेदिक कॉलेज बनाया जाएगा। इसके अलावा, भालखी- माजरा में बनने वाले अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के लिए जमीन की सारी प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है। जल्द ही इसका शिलान्यास किया जाएगा।

आयुष्मान भारत व चिरायु हरियाणा योजनाओं से प्रदेश के साढ़े 29 लाख परिवारों को मिल रहा लाभ

मनोहर लाल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने आयुष्मान भारत योजना चलाई है, जिसके तहत गरीब व जरूरतमंद परिवारों को 5 लाख रुपये के स्वास्थ्य बीमा की सुविधा मिली। इसमें प्रदेश के साढ़े 15 लाख परिवारों को लाभ मिला है। लेकिन हरियाणा सरकार ने एक कदम और आगे बढ़ाकर इस योजना का दायरा बढ़ाया और चिरायु हरियाणा योजना लागू की। आज प्रदेश के लगभग साढ़े 29 लाख परिवारों को इन योजनाओं के तहत लाभ मिल रहा है। इसके अलावा, बिमारियों का पहले ही पता लगाने के लिए नागरिकों के स्वास्थ्य परिक्षण हेतू भी निरोगी हरियाणा योजना बनाई है।

इसके तहत 25 प्रकार के टेस्ट किए जाते हैं। अभी तक लगभग 2 लाख नागरिकों के टेस्ट किए जा चुके हैं। हमारा लक्ष्य सवा करोड़ जनसंख्या को कवर करने का है। उन्होंने कहा कि हर नागरिक स्वस्थ हो, इसके लिए गांवों में आयुर्वेद वेलनेस सेंटर्स खोले जा रहे हैं। योग के लिए 1000 योग शिक्षक लगाए गए हैं। इसके अलावा, सही खान-पान की जानकारी के लिए डायटीशियन्स की नियुक्तियां की जाएंगी। सरकार के यह प्रयास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता, साफ पर्यावरण व साफ पानी की आवश्यकता के विजन् के अनुरूप हैं।

हरियाणा के इतिहास में आज का दिन होगा ऐतिहासिक : अनिल विज

इस अवसर पर गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने कहा कि आज का दिन हरियाणा के इतिहास में ऐतिहासिक दिन माना जाएगा, जब मुख्यमंत्री ने 17 जिलों को एक साथ इतनी बड़ी संख्या में स्वास्थ्य संस्थानों को जनता को समर्पित किया है। उन्होंने कहा कि आज 46 संस्थानों में भिवानी जिले के सिवानी तथा करनाल में 50-50 बेड का अस्पताल भी शामिल है। उन्होंने कहा कि एक समय था जब सरकारी अस्पतालों में एक्स-रे की मशीन भी नहीं हुआ करती थी, लेकिन हमारी सरकार ने आज सभी जिला अस्पतालों में एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड और एमआरआई मशीनों को उपलब्ध करवाया है। इसके अलावा, प्रदेश में 4 कैथ लैब भी चल रही हैं।

162 पुरानी पीएचसी का किया जाएगा नवीनीकरण

अनिल विज ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग का ढांचा पूरी तरह से बदल रहे हैं। विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि प्रदेश में टूटी हुई पीएचसी को नया बनाया जाए। लगभग 162 पीएचसी को चिह्नित किया गया है, जिन्हें तोडकर नया बनाया जाएगा। इसके अलावा, पीएचसी स्तर तक ईसीजी व एक्स-रे की मशीनें उपलब्ध करवाई जाएंगी, ताकि लोगों को अच्छी स्वास्थ्यी सुविधाएं मुहैया करवाई जा सकें।

इस कार्यक्रम में ये रहे उपस्थित

शिक्षा मंत्री कंवरपाल, विधायक धनश्याम दास अरोड़ा, भाजपा जिला अध्यक्ष राजेश सपरा, हरियाणा समाज कल्याण बोर्ड की चेयरपर्सन रोजी मलिक आनन्द, सरस्वती हैरिटेज बोर्ड के वाईस चेयरमैन धूमन सिंह किरमिच, जिला परिषद के अध्यक्ष रमेश ठसका, मेयर मदन चौहान, जिला अध्यपूर्व मंत्री कर्ण देव काम्बोज, पूर्व विधायक बलवंत सिंह सढौरा,पूर्व चेयरमैन रमेश्वर चौहान, पूर्व चेयरमैन राम निवास गर्ग, भाजपा नेता देवेन्द्र चावला, कृष्ण सिंगला, अम्बाला मण्डल की आयुक्त रेणू एस फूलिया, उपायुक्त राहुल हुड्डु, एसपी मोहित हाण्डा, स्वास्थ्य विभाग की महा निदेशक डॉ. सोनिया त्रिखा खुल्लर, एडीसी आयुष सिन्हा, सीएमओ डॉ. मनजीत सिंह, जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. विनोद पुण्डिर, पीएमओ डॉ. पूनम चौधरी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित लोग

यह चिंताजनक स्थिति है कि भारत उन देशों में है, जहां एक आम नागरिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अपनी जेब से सर्वाधिक पैसा खर्च करता है और इसमें सबसे ज्यादा पैसा दवाएं खरीदने पर खर्च होता है। नागरिकों को मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं का 78 फीसद हिस्सा निजी अस्पतालों और डाक्टरों के माध्यम से ही मिल रहा है। देश के करीब 80 फीसद नागरिकों के पास कोई भी स्वास्थ्य बीमा नहीं है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्लूएचओ दुनिया के सभी देशों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर आपसी सहयोग और मानक विकसित करने वाली वैश्विक संस्था है, जिसका प्रमुख काम दुनिया भर में स्वास्थ्य समस्याओं पर नजर रखना और उन्हें सुलझाने में सहयोग करना है। इस संस्था ने 'स्माल पाक्स' जैसी बीमारी को जड़ से खत्म करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। टीबी, एड्स, पोलियो, रक्ताल्पता, नेत्रहीनता, मलेरिया, सार्स, मर्स, इबोला जैसी खतरनाक बीमारियों के बाद कोरोना की रोकथाम में जुटी रही है। इस संस्था के माध्यम से प्रयास किया जाता है कि दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ रहे। इसका पहला लक्ष्य वैश्विक स्वास्थ्य सुधार रहा है, लेकिन इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह सुनिश्चित किया जाना बेहद जरूरी है कि समुदाय में सभी लोगों को अपेक्षित स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें।

मगर कोरोना के सामने जब अमेरिका जैसे विकसित देश को भी बेबस देखा गया और वहां स्वास्थ्य कर्मियों के लिए जरूरी सामान की भारी कमी नजर आई, तब पूरी दुनिया को अहसास हुआ कि अब भी जन-जन तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने के लिए बहुत कुछ किया जाना अभी बाकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन खुद मानता है कि दुनिया की कम से कम आधी आबादी को आवश्यक सेवाएं नहीं उपलब्ध हैं। बीते दशकों में नवीनतम तकनीकों की बदौलत स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आया है, लेकिन एड्स, कैंसर जैसी घातक बीमारियों के अलावा जिस प्रकार लोगों में हृदय रोग, मधुमेह, तपेदिक, मोटापा, तनाव जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं, उसमें स्वास्थ्य क्षेत्र की चुनौतियां बढ़ रही हैं।

जहां तक भारत की बात है, विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार यहां प्रतिवर्ष 58 लाख लोगों की मृत्यु कैंसर, मधुमेह, पक्षाघात, हृदय रोग और फेफड़ों की बीमारियों के कारण होती है, जो विश्व में सर्वाधिक है। हालांकि सरकार का दावा है कि आने वाले वर्षों में आधुनिक चिकित्सा पद्धति और तकनीक की मदद से टीबी, कैंसर तथा एड्स जैसी जानलेवा बीमारियों से बचाव के कारगर रास्ते तलाश लिए जाएंगे और लोग स्वस्थ जीवन जीने लगेंगे। पर विशेषज्ञों के मुताबिक आने वाले समय में कुछ बीमारियां बड़ी परेशानी बन कर उभरेंगी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अनुसार देश में सिरोसिस के मरीजों की संख्या बढ़ रही है, इसके अलावा टायफाइड जैसी जलजनित और संक्रामक बीमारियों पर काबू पाने की चुनौती है। वर्तमान में देश में बुजुर्गों की आबादी करीब चार फीसद है, जिसके 2050 तक चौदह फीसद तक बढ़ने की उम्मीद है। ऐसे में डिमेंशिया यानी स्मृतिभ्रंश जैसी बीमारी बड़े पैमाने पर उभर सकती है।

माना जा रहा है कि डिमेंशिया के मरीजों की संख्या इस दौरान 197 फीसद बढ़ सकती है। इन परिस्थितियों में वृद्धों को घरेलू देखभाल के लिए विशेष सेवाओं की बड़े पैमाने पर जरूरत पड़ेगी। 2050 तक देश में 19 करोड़ से ज्यादा हृदय रोगी होने का अनुमान है। इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में मधुमेह रोगियों की संख्या साल 2030 तक 10.1 करोड़ व 2045 तक 13.42 करोड़ हो सकती है। इसी प्रकार करीब 29.3 फीसद लोग उच्च रक्तचाप की समस्या से पीड़ित हैं, जिनकी संख्या बढ़कर 69.3 फीसद तक हो सकती है। आक्सफैम इंटरनेशनल के असमानता को लेकर जारी सूचकांक के अनुसार भारत जीडीपी के हिसाब से अपने नागरिकों के स्वास्थ्य पर खर्च करने के मामले में 161 देशों के मुकाबले 157वें स्थान पर है। स्वास्थ्य पर किए जाने वाले खर्च के मामले में भारत ब्रिक्स देशों और अपने पड़ोसी देशों पाकिस्तान (4.3 फीसद), बांग्लादेश (5.19 फीसद), श्रीलंका (5.88 फीसद), नेपाल (7.8 फीसद) आदि से बहुत पीछे है।

अमेरिका अपनी जीडीपी का 16.9, जर्मनी 11.2, जापान 10.9, कनाडा 10.7, यूके 9.8 और आस्ट्रेलिया 9.3 फीसद स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च करते हैं। भारत में बच्चों में वेस्टिंग (ऊंचाई के अनुसार कम वजन) की वर्तमान स्थिति 19.3 फीसद पर है, जो वर्ष 2000 के 17.15 फीसद से भी खराब अवस्था में है। देश के एक चौथाई बच्चे आज भी टीकाकरण कार्यक्रम से वंचित हैं। इस साल केंद्रीय बजट में स्वास्थ्य के लिए कुल वित्तीय आवंटन सकल घरेलू उत्पाद का 2.1 प्रतिशत रखा गया है, जबकि नीति आयोग, ग्रामीण सांख्यिकी, नेशनल मेडिकल काउंसिल के आंकड़ों के मुताबिक जीडीपी का 2.5 फीसद से ज्यादा स्वास्थ्य पर खर्च करने की जरूरत है। आंकड़ों के मुताबिक देश में 543 मेडिकल कालेज हैं, जबकि कम से कम 600 मेडिकल कालेज, 50 एम्स तथा 200 स्पेशियलिटी अस्पतालों की आवश्यकता है। कुल 810 जिला अस्पताल (डीएच) तथा 1193 उपमंडल अस्पताल (एसडीएच) हैं।

2018-19 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार साठ फीसद प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में एक डाक्टर है, जबकि पांच फीसद में एक भी डाक्टर नहीं है। करीब 32 फीसद ग्रामीणों को नजदीक के किसी अस्पताल तक जाने के लिए आज भी कम से कम पांच किलोमीटर चलना पड़ता है। केंद्र की गत वर्ष ग्रामीण स्वास्थ्य रिपोर्ट में बताया गया था कि ग्रामीण क्षेत्रों के पांच हजार से भी ज्यादा स्वास्थ्य केंद्रों में 22 हजार विशेषज्ञ डाक्टरों की जरूरत है, जबकि स्वीकृत पद 13637 ही हैं और इनमें 9268 पदों पर नियुक्ति नहीं है। रिक्त पदों को लेकर कई राज्यों में तो स्थिति बेहद दयनीय है। जहां 2005 में विशेषज्ञ डाक्टरों की 46 फीसद कमी थी, वह अब 68 फीसद हो चुकी है।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षित डाक्टरों के अलावा नर्सिंग स्टाफ, रेडियोग्राफर और लैब टेक्नीशियन आदि सहयोगी मेडिकल स्टाफ की भी काफी कमी है। ग्रामीण भारत में प्रति 70 हजार आबादी पर सरकारी अस्पतालों में डब्लूएचओ के अनुशंसित स्तर से बेहद कम, मात्र 3.2 बिस्तर हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल को लेकर सरकारी उदासीनता अत्यधिक चिंताजनक है। चिंता की बात है कि डब्लूएचओ तथा यूनिसेफ जैसी संस्थाओं द्वारा भी इस दिशा में कोई सार्थक प्रयास होता नहीं दिख रहा। हालांकि, सार्वभौमिक, सस्ती और गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सरकार द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, आयुष्मान भारत जैसे कुछ कार्यक्रमों के माध्यम से सकारात्मक पहल की जा रही है।

2018 में लांसेट जर्नल में छपी एक रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत में करीब 24 लाख लोग हर साल केवल इसीलिए मर जाते हैं, क्योंकि उन्हें खराब स्वास्थ्य सेवाएं मिलती हैं। आठ लाख से ज्यादा लोगों की मौत स्वास्थ्य सेवाओं की अपर्याप्तता के कारण हो जाती है। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है कि भारत उन देशों में है, जहां एक आम नागरिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अपनी जेब से सर्वाधिक पैसा खर्च करता है और इसमें सबसे ज्यादा पैसा दवाएं खरीदने पर खर्च होता है। नागरिकों को मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं का 78 फीसद हिस्सा निजी अस्पतालों और डाक्टरों के माध्यम से ही मिल रहा है। देश के करीब 80 फीसद नागरिकों के पास कोई भी स्वास्थ्य बीमा नहीं है। ऐसे में समझा जा सकता है कि सस्ता इलाज कितना मुश्किल है।

जरनैल रंगा

(31मई) पर विशेष

महारानी अहिल्याबाई होलकर जयंती

भारत के इतिहास में महारानी अहिल्याबाई होल्कर को एक वीर योद्धा,प्रजा हितैषी, धर्मपरायण आदर्श शासिका के रूप में जाना जाता है। महारानी अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर के पास चांऊडी गांव में हुआ था। इनके पिता मानको जी शिंदे थे। महारानी अहिल्याबाई होल्कर का विवाह वर्तमान मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित के इंदौर राज्य के होल्कर वंश के शासक मल्हारराव होलकर के पुत्र खंडेराव होलकर से हुआ था। पेशवा के अधीन नागपुर के भोसले ,बड़ौदा के गायकवाड, ग्वालियर के सिंधिया की तरह इंदौर का होलकर राज्य एक प्रसिद्ध मराठा राज्य था।

इंदौर के शासक मल्हारराव होलकर के जीवन काल में ही उनके पुत्र एवं अहिल्याबाई के पति खंडेराव की एक सैन्य अभियान में 1754 में मृत्यु हो गई। छोटी सी उम्र में ही रानी अहिल्याबाई विधवा हो गई। इसके बाद 1766 में उनके ससुर मल्हार राव होलकर का निधन हो गया। इसी वर्ष अहिल्याबाई के पुत्र मालेराव का भी निधन हो गया। इस प्रकार कुछ समय के अंतराल में ही रानी अहिल्याबाई ने अपने कई परिजनों को खो दिया। इन विषम परिस्थितियों में शासन की जिम्मेदारी मल्हारराव होलकर के बाद अहिल्याबाई ने संभाली। उन्होंने शासिका के रूप में जिस त्याग एवं साहस का परिचय दिया, वह भारतीय इतिहास में अद्भुत है।

स्वयं अहिल्याबाई ने कई युद्धों का सफल नेतृत्व किया। वह स्वयं हाथी पर सवार होकर युद्ध किया करती थी। इन्होंने अपने सैनिकों को यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षित किया। इन्होंने महिलाओं की एक सैन्य टुकड़ी भी स्थापित की। उन्होंने अपने राज्य के प्रशासन को बहुत अच्छे से संभाला और कई जनकल्याणकारी कार्य किए। वह देर रात्रि तक बैठकर राजकीय कार्यों को सम्पन्न करती थी। वर्तमान मध्यप्रदेश के निमाड़ में स्थित महेश्वर को राजधानी के रूप में विकसित किया। वहां सुन्दर महल एवं नर्मदा नदी के तट पर सुन्दर घाट बनवाएं। उन्होंने अपने राज्य को न केवल सैनिक दृष्टि से बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी सुदृढ़ बनाया। राज्य की आमदनी बढ़ाने के विभिन्न उपाय किए। व्यापारियों को सुविधाएं देकर व्यापार में वृद्धि की। संचार एवं यातायात के साधनों का विकास किया।

वनों में निवास करने वाले कई जनजातीय समुदाय के लोगों को ग्रामीण अंचलों में बसा कर उन्हें कृषि कार्य के लिए प्रेरित किया। भील एवं गोंड जनजाति समुदाय के लोगों को अपने साथ किया। जनकल्याणकारी कार्यों के अंतर्गत उन्होंने कई सड़कों का निर्माण करवाया। सड़कों के दोनों ओर छायादार वृक्ष लगवाए। स्थान- स्थान पर राहगीरों के लिए कुएं एवं विश्राम गृह का निर्माण करवाया। कई बावड़ियों एवं तालाबों का निर्माण करवाया।

उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में बहुत से कल्याणकारी कार्य किए। नारी उत्थान के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। अहिल्याबाई होल्कर के पहले संपत्ति के अधिकार के अंतर्गत यह नियम था कि यदि किसी पुत्रविहीन स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती थी तो उस स्त्री को संपत्ति में अधिकार नहीं होता था और उस विधवा की संपत्ति राजकोष में जमा हो जाती थी। अहिल्याबाई होल्कर ने इस नियम में संशोधन किया और विधवाओं को संपत्ति में अधिकार दिया। उन्हें पुत्र गोद लेने का अधिकार दिया। कई अनाथालयों का निर्माण करवाकर गरीबों एवं असहायों के उत्थान के लिए कार्य किए। उन्होंने लोगों को जनहित में अपनी संपत्ति को लगाने के लिए प्रेरित किया । उन्होंने न केवल हिंदू बल्कि मुस्लिम लोगों के उत्थान के लिए भी कार्य किए । कई मुस्लिम लोगों को गांव में बसाया। महेश्वर में कई मुस्लिम परिवारों को उन्होंने ही बसाया।

धर्मनिष्ठ शासिका के रूप में उन्होंने कई कार्य किए। इन्होंने न केवल अपने राज्य में बल्कि भारत के विभिन्न स्थानों पर कई मंदिरों, धर्मशालाओं एवं घाटों का निर्माण करवाया। उन घाटों पर महिलाओं के स्नान के लिए अलग से स्थान बनवाएं । इन्होंने धार्मिक स्थानों काशी, मथुरा, हरिद्वार ,द्वारिका,पुरी आदि धार्मिक आस्था के स्थानों पर बहुत से मंदिर एवं धर्मशालाएं बनवाई। कई मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाय। ऐसा माना जाता है कि बनारस का अन्नपूर्णा मंदिर एवं गया का विष्णु मंदिर उन्होंने ही बनवाया। उन्होंने अपने शासनकाल में कला ,साहित्य एवं संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कई विद्वानों को आश्रय दिया। प्रसिद्ध विद्वान कवी मोरोपंत एवं खुशाली को उन्होंने प्रश्रय दिया।

एक सामान्य परिवार से एक राज्य की शासिका बनने के बाद भी उनका जीवन बहुत ही सादगी एवं सरलता का था। वह अपनी न्यायप्रियता के लिए भी जानी जाती थी ।उन्होंने कई न्यायालय स्थापित किए। अपने जीवन काल में ही उन्होंने अपने पिता समान ससुर, अपने पति ,अपने पुत्र मालेराव ,कन्या मुक्ताबाई एवं दामाद की मृत्यु को देखा, फिर भी बिना विचलित हुए बहुत ही साहस से शासन कार्य करते हुए अपना जीवन मानवता के लिए समर्पित कर दिया। इनकी मृत्यु 1795 ई में हुई।

भारत सरकार ने उनके योगदान और मानवता के कार्य को जीवित रखने के लिए उनकी स्मृति में उन पर एक डाक टिकट जारी किया । इंदौर के विश्वविद्यालय का नाम उनके नाम पर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय रखा गया। इस प्रकार महारानी अहिल्याबाई महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनी। उन्हें मानवता एवं भारतीय संस्कृति की मूर्तिमान प्रतीक के रूप में याद किया जाता है।

ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों के लिए एक उमंग : डॉ. रणजीत सिंह फुलिया

2004 में नौकरी से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर डॉ. रणजीत सिंह फुलिया ग्रामीण क्षेत्रों के, विशेषकर हरियाणा और आस – पास के छह राज्यों – राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश के 700 से अधिक सरकारी और निजी विद्यालयों के छात्रों को पढ़ाने और मार्गदर्शन देने का काम कर चुके हैं। डॉ. रणजीत विद्यार्थियों को अंग्रेजी व्याकरण, अंग्रेजी बोलचाल, संप्रेषण कला के विभिन्न पहलू, सामान्य ज्ञान, इतिहास,भूगोल और भारत की राजनीतिक प्रणाली पर मार्गदर्शन भी देते हैं, ताकि छात्रों को आगामी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी तैयार किया जा सके। ऐसे विशेषज्ञ और निस्स्वार्थ भाव से सेवा करने वाले शिक्षक के रूप में आपकी निःशुल्क सेवाएं विशेषकर ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों को एक नए उमंग – उत्साह और जज्बे से सराबोर कर रही हैं।

जन्म –

9 मई 1958 में, गांव अटावला, जिला पानीपत, हरियाणा में जन्मे डॉ. रणजीत सिंह फुलिया एक शिक्षाविद, लेखक और समाज सेवक हैं। आपने मुख्यत: सरकारी स्कूलों में शिक्षा ग्रहण की। आपके पिताजी का नाम श्री संत राम और माताजी का नाम श्रीमती भारती देवी था। दोनों ही भारतीय संस्कृति के उदात्त स्वरूप तथा मानवीय मूल्यों में गहरी आस्था रखते थे तथा उन्होंने बच्चों को भी ऐसे ही श्रेष्ठ संस्कार दिए।आपका परिवार आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित था और संत-शिरोमणि सतगुरु रविदास, सदुरु कबीर आदि महापुरुषों की शिक्षाओं पर चलकर, अंधविश्वास तथा पाखंड से दूर था। बालक रणजीत बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे और पढ़ाई में बहुत रुचि रखते थे।

शिक्षा एवं नौकरी –

आपने गांव के सरकारी स्कूल से मिडिल परीक्षा पास की और पड़ोसी गांव अदियाना के उच्च विद्यालय से मैट्रिकुलेशन परीक्षा प्रथम श्रेणी में और प्रथम रहकर पास की। आर्य कॉलेज, पानीपत से स्नातक की पढ़ाई करते हुए भी आप पूरे करनाल जिले में प्रथम या द्वितीय स्थान पर रहते थे तथा अनेक बार सम्मानित भी हुए।

आगे एमए की पढ़ाई के लिए बड़े भाई डॉक्टर राज रूप फुलिया के पास नई दिल्ली चले गए। दिल्ली विश्वविद्यालय से एम. ए. की पढ़ाई करते हुए ही आपने प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण कर सन 1980 में इन्डियन एयरलाइन्स में ट्रैफिक असिस्टेंट की नौकरी कर ली, जहां स्व. राजीव गांधी जी (तत्कालीन पायलट, बाद में भारत के प्रधान मंत्री बने) के सहकर्मी रहे। आपके सबसे बड़े भाई अनूप सिंह भारतीय वायु सेना में कार्यरत थे। बड़े भाई डॉक्टर राज रूप फुलिया सन 1980 में यूपीएससी द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षा पास कर इंडियन इकोनॉमिक सर्विस, सन 1981 में आईआरपीएस और फिर सन 1983 में आईएएस अधिकारी बन गए और अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा के पद से सेवानिवृत्त हुए।

रणजीत जी सन 1982 में प्रतियोगी परीक्षा पास कर, नेशनल इंश्योरेंस कंपनी में प्रथम श्रेणी अधिकारी नियुक्त हुए और वरिष्ठ शाखा प्रबंधक, वरिष्ठ मंडल प्रबंधक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। बाईस वर्ष सेवा करने के बाद, सन 2004 में नौकरी से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर आप ग्रामीण क्षेत्रों के, विशेषकर हरियाणा और आस –पास के छह राज्यों -- राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश के 700 से अधिक सरकारी और निजी विद्यालयों के छात्रों को पढ़ाने और मार्गदर्शन देने का काम कर चुके हैं। डॉ. रणजीत विद्यार्थियों को अंग्रेजी व्याकरण, अंग्रेजी बोलचाल, संप्रेषण कला के विभिन्न पहलू, सामान्य ज्ञान, इतिहास,भूगोल और भारत की राजनीतिक प्रणाली पर मार्गदर्शन भी देते हैं, ताकि छात्रों को आगामी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी तैयार किया जा सके।

डॉ. रणजीत जी दिल्ली विश्वविद्यालय से अनुवाद में डिप्लॉमा (गोल्ड मेडलिस्ट) और भारतीय विद्या भवन से पत्रकारिता डिप्लोमा धारक हैं। इन्होने सन 2015 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से 'हरियाणा में वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा प्रशासन' पर पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में पीएच. डी. की डिग्री भी प्राप्त की है। आप अंग्रेजी की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका द वर्ल्ड रिन्यूअल के सह – संपादक हैं और आप द्वारा लिखित एक सौ से अधिक लेख , साक्षात्कार, कविताएं आदि प्रतिष्ठित पत्र – पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आप द्वारा छह पुस्तके अनूदित/संपादित होकर छप चुकी हैं।

विद्यार्थियों का विभिन्न विषयों में ज्ञान बढाने के उद्देश्य से डॉ. रणजीत जी ने अनेक टेस्ट पेपर तैयार किए हैं जिनके द्वारा छात्रों की बुद्धिमत्ता का आकलन करने के बाद, शैक्षिक पुस्तकों , शब्दकोशों, व्याकरण और सामान्य ज्ञान पर पुस्तकों आदि के रूप में वे हरियाणा, पंजाब, दिल्ली,राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश व मध्य प्रदेश के 700 से अधिक स्कूलों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों जैसे औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, महाविद्यालय और विद्यालय (सरकारी तथा निजी) आदि में दस हजार से अधिक छात्रों को सम्मानित कर चुके हैं। ये सभी स्वैच्छिक और निःशुल्क प्रयास , ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों को अभूतपूर्व उमंग और उत्साह प्रदान करते हैं।

सम्मान –

हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्र में खोले गए अनेक पुस्तकालयों में भी विद्यार्थियों को निःशुल्क मार्गदर्शन देते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अपनी स्वैच्छिक और निःशुल्क सेवाओं के कारण आपको अनेक विद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है, जैसे फिफ्टी विलेजर्स सेवा संस्थान और कलाम आश्रम, बाड़मेर, टर्निंग प्वॉइंट तारानगर, नवोदय क्रांति और मंथन(दोनों सरकारी शिक्षकों के स्वैच्छिक समूह) तथा प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट, नारनौल द्वारा सन 2021 में उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान। अनेक विद्यालयों और शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा भी आपको सम्मानित किया गया है।

डॉ. रणजीत सिंह फुलिया विद्यार्थियों के आदर्श शिक्षक और अध्यापकों के सच्चे मार्गदर्शक के रूप में विख्यात हैं। ये अंग्रेजी भाषा को बड़े ही सरल तरीके से पढ़ाते हैं और हजारों विद्यार्थी इनसे इंग्लिश बोलचाल भी सीख रहे हैं। उन सभी विद्यार्थियों के वीडियो आपने सोशल मीडिया पर साझा भी किए हैं, जिनसे पूरे भारत देश के विद्यार्थी प्रेरणा ले रहे हैं। ऐसे विशेषज्ञ और निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले शिक्षक के रूप में आपकी निःशुल्क सेवाएं विशेषकर ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों को एक नए उमंग- उत्साह और जज्बे से सराबोर कर रही हैं।

डॉ. सत्यवान 'सौरभ'
भिवानी, हरियाणा

(18 मई) जीवन परिचय

चन्द्रगुप्त मौर्य जयंती विशेष

मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त भारत के बहुत अच्छे शासक माने जाते है, जिन्होंने बहुत सालों तक शासन किया। चन्द्रगुप्त मौर्य एक ऐसे शासक थे जो पुरे भारत को एकिकृत करने में सफल रहे थे, उन्होंने अपने अकेले के दम पर पुरे भारत पर शासन किया। उनसे पहले पुरे देश में छोटे छोटे शासक हुआ करते थे, जो यहाँ वहां अलग शासन चलाते थे, देश में एकजुटता नहीं थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन कश्मीर से लेकर दक्षिण के डेक्कन तक, पूर्व के असम से पश्चिम के अफगानिस्तान तक फैलाया था। भारत देश के अलावा चन्द्रगुप्त मौर्य आस पास के देशों में भी शासन किया करते थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के बचपन के बारे में कोई ज्यादा नहीं जानता है। कहा जाता है वे मगध के वंशज थे। चन्द्रगुप्त मौर्य जवानी से ही तेज बुद्धिमानी थे, उनमें सफल सच्चे शासक की पूरी गुणवत्ता थी, जो चाणक्य ने पहचानी और उन्हें राजनीती व सामाजिक शिक्षा दी।

चन्द्रगुप्त मौर्य के परिवार की कही भी बहुत सही जानकारी नहीं मिलती है, कहा जाता है वे राजा नंदा व उनकी पत्नी मुरा के बेटे थे। कुछ लोग कहते है वे मौर्य शासक के परिवार के थे, जो क्षत्रीय थे। कहते है चन्द्रगुप्त मौर्य के दादा की दो पत्नियाँ थी, एक से उन्हें 9 बेटे थे, जिन्हें नवनादास कहते थे, दूसरी पत्नी से उन्हें चन्द्रगुप्त मौर्य के पिता बस थे, जिन्हें नंदा कहते थे। नवनादास अपने सौतले भाई से जलते थे, जिसके चलते वे नंदा को मारने की कोशिश करते थे। नंदा के चन्द्रगुप्त मौर्य को मिला कर 100 पुत्र थे, जिन्हें नवनादास मार डालते है बस चन्द्रगुप्त मौर्य किसी तरह बच जाते है और मगध के साम्राज्य में रहने लगते है। यही पर उनकी मुलाकात चाणक्य से हुई। इसके बाद से उनका जीवन बदल गया। चाणक्य ने उनके गुणों को पहचाना और तकशिला विद्यालय ले गए, जहाँ वे पढ़ाया करते थे। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपने अनुसार सारी शिक्षा दी, उन्हें ज्ञानी, बुद्धिमानी, समझदार महापुरुष बनाया, उन्हें एक शासक के सारे गुण सिखाये।

चन्द्रगुप्त मौर्य की पहली पत्नी दुर्धरा थी, जिनसे उन्हें बिंदुसार नाम का बेटा हुआ, इसके अलावा दूसरी पत्नी देवी हेलना थी, जिनसे उन्हें जस्टिन नाम के पुत्र हुआ। कहते है चन्द्रगुप्त मौर्य की दुश्मन से रक्षा करने के लिए आचार्य चाणक्य उन्हें रोज खाने में थोडा थोडा जहर मिलाकर देते थे, जिससे उनके शरीर मे प्रतिरोधक छमता आ जाये और उनके शत्रु उन्हें किसी तरह का जहर न दे पाए। यह खाना चन्द्रगुप्त अपनी पत्नी के साथ दुर्धरा बाटते थे , लेकिन एक दिन उनके शत्रु ने वही जहर ज्यादा मात्रा मे उनके खाने मे मिला दिया, उस समय उनकी पत्नी गर्भवती थी, दुर्धरा इसे सहन नहीं कर पाती है और मर जाती है, लेकिन चाणक्य समय पर पहुँच कर उनके बेटे को बचा लेते है। बिंदुसार को आज भी उनके बेटे अशोका के लिए याद किया जाता है, जो एक महान राजा था।

मोर्य साम्राज्य की स्थापना

मौर्य साम्राज्य खड़े होने का पूरा श्रेय चाणक्य को जाता है। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य से वादा किया था, कि वे उसे उसका हक दिला कर रहेंगें, उसे नवदास की राजगद्दी पर बैठाएंगे। चाणक्य जब तकशिला में टीचर थे, तब अलेक्सेंडर भारत में हमला करने की तैयारी में था। तब तकशिला के राजा, व गन्धारा दोनों ने अलेक्सेंडर के सामने घुटने टेक दिए, चाणक्य ने देश के अलग अलग राजाओं से मदद मांगी। पंजाब के राजा पर्वतेश्वर ने अलेक्सेंडर को युद्ध के लिए ललकारा। परन्तु पंजाब के राजा को हार का सामना करना पढ़ा, जिसके बाद चाणक्य ने धनानंद, नंदा साम्राज्य के शासक से मदद मांगी, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। इस घटना के बाद चाणक्य ने तय किया कि वे एक अपना नया साम्राज्य खड़ा करेंगे जो अंग्रेज हमलावरों से देश की रक्षा करे, और साम्राज्य उनके अनुसार नीति से चले। जिसके लिए उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को चुना। चाणक्य मौर्य साम्राज्य के प्रधानमंत्री कहे जाते थे।

चन्द्रगुप्त मौर्य की जीत

चन्द्रगुप्त मौर्य ने अलेक्सेंडर को चाणक्य नीति के अनुसार चलकर ही हराया था। इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य एक ताकतवर शासक के रूप में सामने आ गए थे, उन्होंने इसके बाद अपने सबसे बड़े दुश्मन नंदा पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उन्होंने हिमालय के राजा पर्वत्का के साथ मिल कर धना नंदा पर आक्रमण किया। 321 ई.पू में कुसुमपुर में ये लड़ाई हुई जो कई दिनों तक चली अंत में चन्द्रगुप्त मौर्य को विजय प्राप्त हुई और उत्तर का ये सबसे मजबूत मौर्या साम्राज्य बन गया। इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने उत्तर से दक्षिण की ओर अपना रुख किया और बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक राज्य फैलाने में लगे रहे। विन्ध्य को डेक्कन से जोड़ने का सपना चन्द्रगुप्त मौर्य ने सच कर दिखाया, दक्षिण का अधिकतर भाग मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया था।

305 ई.पू में चन्द्रगुप्त मौर्य ने पूर्वी पर्शिया में अपना साम्राज्य फैलाना चाहा, उस समय वहां सेलयूचुस निकेटर का राज्य था, जो एम्पायर का संसथापक था व अलेक्सेंडर का जनरल भी रह चूका था। पूर्वी पर्शिया का बहुत सा भाग चन्द्रगुप्त मौर्य जीत चुके थे, वे शांति से इस युद्ध का अंत करना चाहते थे, अंत में उन्होंने वहां के राजा से समझौता कर लिया और चन्द्रगुप्त मौर्य के हाथों में सारा साम्राज्य आ गया, इसी के साथ निकेटर ने अपनी बेटी की शादी भी चन्द्रगुप्त मौर्य से कर दी। इसके बदले उसे 500 हाथियों की विशाल सेना भी मिली, जिसे वे आगे अपने युद्ध में उपयोग करते थे। चन्द्रगुप्त मौर्य ने चारों तरफ मौर्य साम्राज्य खड़ा कर दिया था, बस कलिंगा (अब उड़ीसा) और तमिल इस सामराज्य का हिस्सा नहीं था। इन हिस्सों को बाद में उनके पोते अशोका ने अपने साम्राज्य में जोड़ दिया था।

चन्द्रगुप्त मौर्य का जैन धर्म की ओर झुकाव व म्रत्यु

चन्द्रगुप्त मौर्य जब 50 साल के थे, तब उनका झुकाव जैन धर्म की तरफ हुआ, उनके गुरु भी जैन धर्म के थे जिनका नाम भद्रबाहु था। आखिर वे अपना साम्राज्य बेटे बिंदुसार को देकर कर्नाटक चले गए, जहाँ उन्होंने 5 हफ्तों तक बिना खाए पिए ध्यान किया, जिसे संथारा कहते है। ये तब तक करते है जब तक आप मर ना जाओ। यही चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने प्राण त्याग दिए।

चन्द्रगुप्त मौर्य के जाने के बाद उनके बेटे ने साम्राज्य आगे बढाया, जिनका साथ चाणक्य ने दिया। चन्द्रगुप्त मौर्य व चाणक्य ने मिल कर अपनी सूझबूझ से इतना बड़ा एम्पायर खड़ा किया था। वे कई बार हारे भी, लेकिन वे अपनी हार से भी कुछ सीखकर आगे बढ़ते थे। चाणक्य कूटनीति के चलते ही चन्द्रगुप्त मौर्य ने इतना बड़ा एम्पायर खड़ा किया था, जिसे आगे जाकर उनके पोते अशोका ने एक नए मुकाम पर पहुँचाया था। चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे महान शासक योद्धा से आज के नौजवान बहुत सी बातें सीखते है, इनपर बहुत सी पुस्तकें भी लिखी गई है, साथ ही चन्द्रगुप्त मौर्य टीवी सीरीज भी आई थी, जो बहुत पसंद की गई थी।

सोशल मिडिया पोस्ट

जहाँ हो, वहीं पर भजन

दो बहने चक्की पर गेहूँ पीस रही थी, पीसते पीसते एक बहन गेहूँ के दाने खा भी रही थी। दूसरी बहन उसको बीच बीच में समझा रही थी कि, देख अभी मत खा, घर जाकर आराम से बैठ कर चोपड़ कर चूरी बनाकर खायेंगे। लेकिन फिर भी दूसरी बहन खा भी रही थी पीस भी रही थी ।

कुछ देर बाद गेहूँ पीस कर कनस्तर में डाल कर दोनों घर की तरफ चल पड़ीं। अचानक रास्ते में कीचड़ में गिरने से सारा आटा खराब हो गया। कबीर दास जी सब देख रहे थे तो उन्होंने लिखा :–

आटो पडयो कीच में, कछु न आयो हाथ।
पीसत पीसत चाबयो, सो ही निभयो साथ ॥

अर्थात समस्याओं से भरे जीवन में रहते हुए भगवान् से अपनी प्रीत लगाये रखनी है। न की अच्छा समय आने का इंतजार करना है। भगवान् से की गई यही प्रीत और परतीत अंत समय तक साथ निभायेगी।

इसलिये उठते बैठते सोते जागते दुनियाँ के काम करते हुए हरि से लगन लगाये रखो।

दृढ़ संकल्प

एक बहुत प्रसिद्ध लामा ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जब मैं पांच वर्ष का था, तो मुझे विद्यापीठ में पढ़ने के लिए भेजा गया। रात को मेरे पिता ने मुझसे कहा तब मैं कुल पांच वर्ष का था रात को मेरे पिता ने मुझसे कहा कि कल सुबह चार बजे तुझे विद्यापीठ भेजा जाएगा। और स्मरण रहे, सुबह तेरी विदाई के लिए न तो तेरी मां होगी और न मैं मौजूद रहूंगा। मां इसलिए मौजूद नहीं रखी जा सकती कि उसकी आंखों में आंसू आ जाएंगे। और रोती हुई मां को छोड कर तू जाएगा तो तेरा मन पीछे की तरफ, पीछे की तरफ होता रहेगा और हमारे घर में ऐसा आदमी कभी पैदा नहीं हुआ जो पीछे की तरफ देखता हो। मैं इसलिए मौजूद नहीं रहूंगा कि अगर तूने एक भी बार घोडे पर बैठ कर पीछे की तरफ देख लिया, तो तू फिर मेरा लडका नहीं रह जाएगा, फिर इस घर का दरवाजा तेरे लिए बंद हो जाएगा। नौकर तुझे विदा दे देंगे सुबह। और स्मरण रहे, घोड़े पर से पीछे लौट कर मत देखना। हमारे घर में कोई ऐसा आदमी नहीं हुआ जो पीछे की तरफ लौट कर देखता हो। और अगर तूने पीछे की तरफ लौट कर देखा, तो समझ लेना इस घर से फिर तेरा कोई नाता नहीं।

पांच वर्ष के बच्चे से ऐसी अपेक्षा? पांच वर्ष का बच्चा सुबह चार बजे उठा दिया गया और घोड़े पर बिठा दिया गया। नौकरों ने उसे विदा कर दिया। चलते वक्त नौकर ने भी कहा बेटे होशियारी से! मोड तक दिखाई पडता है, पिता ऊपर से देखते हैं। मोड तक पीछे लौट कर मत देखना। इस घर में सब बच्चे ऐसे ही विदा हुए, लेकिन किसी ने पीछे लौट कर नहीं देखा। और जाते वक्त नौकर ने कहा कि तुम जहां भेजे जा रहे हो वह विद्यापीठ साधारण नहीं है। वहां देश के जो श्रेष्ठतम पुरुषज्ज्उस विद्यापीठ से पैदा होते हैं। वहां बडी कठिन परीक्षा होगी प्रवेश की। तो चाहे कुछ भी हो जाए, हर कोशिश करना कि उस प्रवेशपरीक्षा में प्रविष्ट हो जाओ। क्योंकि वहां से असफल हो गए तो इस घर में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं रह जाएगी।

पांच वर्ष का लडका, उसके साथ ऐसी कठोरता! वह घोडे पर बैठ गया और उसने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि मेरी आंखों में आंसू भरने लगे, लेकिन पीछे लौट कर कैसे देख सकता हूं उस घर को, पिता कोज्जिस घर को छोड कर जाना पड रहा है मुझे अनजान में। इतना छोटा हूं। लेकिन लौट कर नहीं देखा जा सकता, क्योंकि मेरे घर में कभी किसी ने लौट कर नहीं देखा। और अगर पिता ने देख लिया तो फिर इस घर से हमेशा के लिए वंचित हो जाऊंगा, इसीलिए कडी हिम्मत रखी और आगे की तरफ देखता रहा, पीछे लौट कर नहीं देखा।

इस बच्चे के भीतर कोई चीज पैदा की जा रही है। इस बच्चे के भीतर कोई संकल्प जगाया जा रहा है, जो इसके नाभिकेंद्र को मजबूत करेगा। यह बाप कठोर नहीं है, यह बाप बहुत प्रेम से भरा हुआ है। और हमारे सब मांबाप गलत हैं जो प्रेम से भरे हुए दिखाई पड रहे हैं, वे भीतर के सारे केंद्रों को शिथिल किए दे रहे हैं। भीतर कोई बल, कोई संबल खडा नहीं किया जा रहा है।

वह स्कूल में पहुंच गया। पांच वर्ष का छोटा सा बच्चा, उसकी क्या सामर्थ्य और क्या हैसियत! स्कूल के प्रधान ने, विद्यापीठ के प्रधान ने कहा कि यहां की प्रवेशपरीक्षा कठिन है। दरवाजे पर आंख बंद करके बैठ जाओ और जब तक मैं वापस न आऊं तब तक आंख मत खोलना, चाहे कुछ भी हो जाए। यही तुम्हारी प्रवेशपरीक्षा है। अगर तुमने आंख खोल ली तो हम वापस लौटा देंगे, क्योंकि जिसका अपने ऊपर इतना भी बल नहीं है कि कुछ देर तक

आंख बंद किए बैठा रहे, वह और क्या सीख सकेगा? उसके सीखने का दरवाजा खत्म हो गया, बंद हो गया। फिर तुम उस काम के लायक नहीं हो, फिर तुम जाकर और कुछ करना। पांच वर्ष के छोटे से बच्चे कोज!

वह बैठ गया दरवाजे पर आंख बंद करके। मक्खियां उसे सताने लगीं, लेकिन आंख खोल कर नहीं देखना है, क्योंकि आंख खोल कर देखा तो मामला खत्म हो जाएगा। छोटे मोटे जो दूसरे बच्चे स्कूल में आ जा रहे हैं, कोई उसे धक्का देने लगा है, कोई उसको परेशान करने लगा है, लेकिन आंख खोल कर नहीं देखना है, क्योंकि आंख खोल कर देखा तो मामला फिर खराब हो जाएगा। और नौकरों ने आते वक्त कहा है कि अगर प्रवेशपरीक्षा में असफल हो गए तो यह घर भी तुम्हारा नहीं।

एक घंटा बीत गया, दो घंटे बीत गए, वह आंख बंद किए बैठा है और डरा हुआ है कि कहीं भूल से भी आंख न खुल जाए और आंख खोलने के सब टेम्पटेशन मौजूद हैं वहां। रास्ता चल रहा है, बच्चे निकल रहे हैं, मक्खियां सता रही हैं, कोई बच्चे उसे धक्के देते जा रहे हैं, कोई बच्चा कंकड मार रहा है। और उसे आंख खोलने का सब मन होता है कि देखे कि अब तक गुरु नहीं आया। एक घंटा, दो घंटा, तीन घंटा, चार घंटा—उसने लिखा है कि छह घंटे!

और छह घंटे बाद गुरु आया और उसने कहा बेटे, तेरी प्रवेशपरीक्षा पूरी हो गई। तू भीतर आ, तू संकल्पवान युवक बनेगा। तेरे भीतर संकल्प है, तेरे भीतर विल है, तू जो चाहे कर सकता है। पांच छह घंटे इस उम्र में आंख बंद करके बैठना बडी बात है। उसने उसे छाती से लगा लिया और उसने उसे कहा तू हैरान मत होना, वे बच्चे तुझे सताने नहीं.. सता नहीं रहे थे, वे बच्चे भेजे गए थे। उन्हें कहा गया था कि तुझे थोडा परेशान करेंगे ताकि तेरा आंख खोलने का खयाल आ जाए।

उस लामा ने लिखा है। उस वक्त तो मैं सोचता था मेरे साथ बडी कठोरता बरती जा रही है, लेकिन अब जीवन के अंत में मैं धन्यवाद से भरा हूं उन लोगों के प्रति जो मेरे प्रति कठोर थे। उन्होंने मेरे भीतर कुछ सोई हुई चीजें पैदा कर दीं, कोई सोया हुआ बल जग गया।

बिमला सरोहा शाहाबाद हलका के गांवों में कर रही जोर शोर कांग्रेस की नीतियों प्रचार

संगठन की मजबूती के लिए डोर टू डोर जाकर ग्रामीणों से मिल रही बिमला सराहा

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । प्रदेश महिला कांग्रेस की वरिष्ठ उपाध्यक्ष बिमला सरोहा ने शाहाबाद हलका के विभिन्न गांवों का दौरा कर कांग्रेस की नीतियों का प्रचार कर रही है। इस दौरान बिमला सरोहा ग्रामीणों को जहां प्रदेश की गठबंधन सरकार की गलत नीतियों के बारे में बताती है, वहीं उन्हें कांग्रेस पार्टी द्वारा जनता के हित में चलाए जा रहे आंदोलनों के बारे में भी जानकारी दे रही है।

बिमला सरोहा हलके में बैठकें आयोजित कर कांग्रेस कार्यकर्ताओं में जोश भर रही हैं। कार्यकर्ताओं की बैठक के दौरान कहा कि आने वाले विधानसभा चुनाव में निश्चित रूप से कांग्रेस की सरकार बनने वाली है। इसलिए कांग्रेस कार्यकर्ता अभी से ही पूरी मुस्तैदी के साथ संगठन को मजबूती देने के लिए जुट जाएं। उन्होंने कहा कि भाजपा जजपा गठबंधन सरकार की गलत नीतियों से हर वर्ग में हाहाकार मचा हुआ है। युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा। दूसरी ओर महंगाई चरम सीमा पर है, जिसके चलते लोगों के सामने घर का गुजारा करना मुश्किल हो चला है। गठबंधन सरकार लोगों की आशाओं पर खरा नहीं उतरी। इसलिए अब इस सरकार को सत्ता से हटाना कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य है और कांग्रेस कार्यकर्ताओं की मेहनत से ही गठबंधन सरकार को सत्ता से बाहर किया जा सकता है।

इसके अलावा बिमला सरोहा ने दाउमाजरा, लंडी, गोलपुरा, भोकर माजरा, नाहर माजरा, धीर पुर, धुराली सहित दर्जनों गांवों का दौरा कर ग्रामीणों को कांग्रेस पार्टी की नीतियों के साथ जुडने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी की पूर्व अध्यक्ष एवं आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की महासचिव कुमारी शैलजा पूरे देश के अंदर कांग्रेस पार्टी को मजबूती देने के लिए जी जान से जुटी हुई है। बिमला सरोहा ने शाहाबाद के गोलपुरा सहित कई गावों के खेतों में काम कर रही महिलाओं से भी बातचीत की और उनकी दिनचर्या की जानकारी ली। उन्होंने महिलाओं को आह्वान किया कि वे कांग्रेस पार्टी के साथ जुड़ें, ताकि कांग्रेस की सरकार बनने पर हर वर्ग को राहत मिल सके।

प्रैस कल्ब ने मिलकर जताया मुख्यमंत्री का आभार

पत्रकारों की मांगों को लेकर सौंपा मुख्यमंत्री मनोहर लाल को मांग पत्र

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर, प्रैस कल्ब यमुनानगर के दर्जनों मीडिया कर्मी मुख्यमंत्री मनोहर लाल से मिले, उन्होंने हरियाणा प्रदेश में पत्रकारों के हितों में चलाई जा रही योजनाओं के लिए उनका आभार प्रकट किया। प्रैस कल्ब के पदाधिकारियों ने वीरवार को भाजपा कार्यालय में जाकर मुख्यमंत्री का पत्रकारों के हित में बनाई गई योजनाओं के लिए आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि पैंशन में बढौतरी करके उन्होंने हरियाणा प्रदेश के पत्रकारों का मान-सम्मान बढ़ाया है, इतना ही नही मुख्यमंत्री ने कर्मचारियों के डीए के अनुसार पैंशन में वृद्धि करने की भी घोषणा की है। इसके साथ-साथ प्रैस कल्ब के सदस्यों ने मुख्यमंत्री को मांग पत्र भी प्रस्तुत किया जिसमें पत्रकारों व उनके परिवारों को मुफ्त चिकित्सा सुविधा प्रदान करने बारे, चण्डीगढ की तर्ज पर जिले में भवन उपलब्ध करवाने बारे, यमुनानगर के पत्रकारों के मिल्क माजरा टोल प्लाजा पर फ्री सुविधा उपलब्ध करवाने का अनुरोध किया ताकि जिले के पत्रकार सम्बंधित क्षेत्र में जाकर कवरेज कर सकें। उन्होंने अपने मांग पत्र में पत्रकारों को वर्ष में एक बार विभिन्न राज्यों का भ्रमण करवाने बारे, कोविड के कारण मान्यता प्राप्त पत्रकारों की रेलवे यात्रा की सुविधा बहाल करवाने के लिए तथा एचएसवीपी में वकीलों की तर्ज पर पत्रकारों को रियाहती दर पर प्लाट उपलब्ध करवाने की मांग की गई है। इस अवसर पर प्रभजीत सिंह लक्की,हरीश कोहली, प्रदीप शर्मा, राकेश भारतीय, मोहित विज, सुमित ऑबराय, सतीश धीमान, नरेन्द्र बक्शी, राहुल सहजवानी, संदीप शर्मा, गुरदयाल सिंह निमर, चंद्रशेखर भाटिया, राकेश जौली, अंशु अरोड़ा, तिलक भारद्वाज, अजय खुराना, रामरत्न, सुनील गुर्जर व परवेज खान उपस्थित थे।

वैकल्पिक फसलें लगाएं, अनुदान पाएं : डॉ गुलाब सिंह

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । मेरा पानी मेरी विरासत योजना के तहत कृषि विभाग के अधिकारी किसानों को पानी बचाने के लिए जागरूक कर रहे हैं, ताकि किसान धान की जगह अन्य वैकल्पिक फसलें लगाएं और उनपर विभाग के द्वारा 7 हजार रुपए प्रति एकड़ दिए जाने की योजना का लाभ उठाएं। विभाग द्वारा जिला के विभिन्न गांवों में धान की सीधी बिजाई को लेकर जागरुक करने के लिए किसान प्रशिक्षण शिविर लगाए जा रहे हैं जिसमे धान की सीधी बिजाई के लिए किसानों को 4 रुपए प्रति एकड़ कृषि विभाग के द्वारा सहायता प्रदान की जानकारी दी जा रही है। कृषि अधिकारी डॉ. गुलाब सिंह ने बताया कि लगातार गिरते हुए भू-जल स्तर को सुधारने व फसल विविधिकरण को बढाने के लिए विभाग की तरफ से जिला व खंड के किसानों से धान फसल लगाने की बजाये वैकल्पिक फसलों की बिजाई करने की अपील की जाती है। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा वैकल्पिक फसलों जैसे-मक्का, कपास, खरीफ दाले (अरहर, मूंग, मोठ, उड़द, ग्वार, सोयाबिन), खरीफ तिलहन (तिल, अरण्डी, मुगंफली) चारा फसले, खरीफ प्याज, सब्जियां यहां तक की खेत का खाली रखना व कृषि वानिकी पोपलर व सफेदा लगाने पर विभाग द्वारा एक मुश्त किसान के सीधे खाते में भौतिक सत्यापन उपरांत 7 हजार रूपये प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।

उनके अनुसार इस स्कीम का लाभ केवल उन्हीं किसानों को दिया जाएगा जिन्होंने पिछले साल उस खेत में धान की फसल ली थी और वह अब की बार उसी खेत में अन्य कोई वैकल्पिक फसल लेना चाहता है। इस स्कीम में खरीफ 2022 में जिस किसान द्वारा फसल विविधिकरण यानि इस स्कीम का लाभ लिया था वह भी अब की बार धान न लगा कर उसी खेत में दौबारा कोई वैकल्पिक फसल लेता है तो उसको भी इस स्कीम का लाभ दिया जाएगा व इस स्कीम का लाभ लेने के लिए किसान को सबसे पहले मेरी फसल-मेरा विरासत संबंधी पोर्टल पर पंजीकरण करवाना अनिवार्य रहेगा, जिसकी अंतिम तिथि 31 जुलाई

रखी गई है। सरकार द्वारा 100 प्रतिशत एम.एस.पी. आधारित फसलों की खरीद की जाएगी व प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ लेने के लिए किसान को अपने स्तर पर ही बीमा करवाना होगा। मेरा पानी-मेरी विरासत स्कीम के निरीक्षण हेतु एक प्रतिशत निरीक्षण जिले के उपायुक्त द्वारा व तीन प्रतिशत सम्बंधित उप मण्डल अधिकारी, (नागरिक) द्वारा किया जाएगा।

इस सम्बंध में अधिक जानकारी के लिए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के टोल फ्री नम्बर 1800-180-2117 या अपने गांव के कृषि विकास अधिकारी/खण्ड कृषि अधिकारी/उपमण्डल कृषि अधिकारी/उप कृषि निदेशक कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर सकते है।

अमृतवाणी

अमृतवाणी

संत शिरोमणि गुरु रविदास जिओ की

जब हम होते तब तूं नाही अब तूं ही मैं नाही ।। अनल अगम जैसे लहर मइओइदधि जल केवल जल माहिं ।।

जय गुरुदेव जी

व्याख्या : श्री गुरू रविदास महाराज जी पवित्र अमृतवाणी में फरमान करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु जी ! जब तक जीव के मन में मैं मेरी का झूठा अंहकार है तब तक जीव को आपकी प्राप्ति नहीं होती , पर जब जीव अपने मन में से मैं (अंहकार) मिटा देता है तो परमात्मा जी आप ही हो मैं कुछ नहीं का निश्चय हो जाता है । श्री गुरु रविदास जी उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जैसे समुद्र में से तेज आंधी आने के कारण बहुत सी लहरें उठती है और समुद्र में ही समा जाती है और केवल पानी ही पानी नजर आता है ऐसे ही जब जीव के मन में अंहकार होता है तब तक जीव के प्रभु से दूर रहता है । जब जीव अपने मन में से अंहकार को मिटाकर प्रभु का सिमरन करता है तो प्रभु का ही रूप हो जाता है ।

धन गुरुदेव जी

डॉ रणजीत फुलिया द्वारा तैयार किया गया अंग्रेजी की व्याकरण के सही उच्चारण

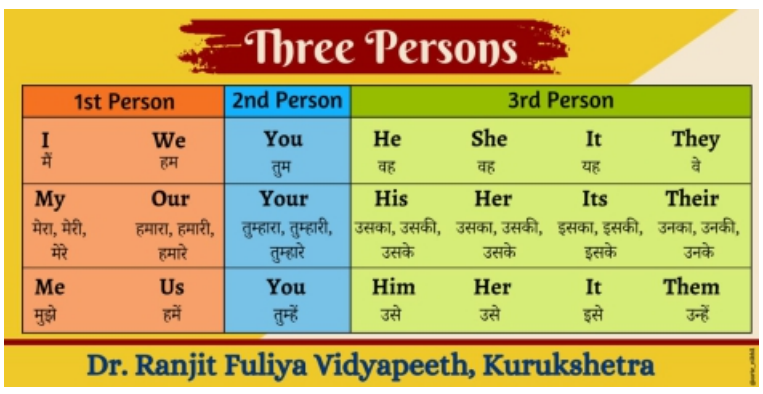

डॉ रणजीत फुलिया द्वारा तैयार किया गया
अंग्रेजी की व्याकरण के सही उच्चारण
पार्ट -2
शिक्षकों से अनुरोध :

कृपया छात्रों को ऐसे अभ्यास करवाकर उन्हें संप्रेषण कला में निपुण बनने में सहयोग करें!

सुजाता: नमस्कार। अंग्रेजी समझने , पढ़ने, लिखने और बोलने में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए आज English Grammar के महत्वपूर्ण विषय Pronouns के अंतर्गत Three Persons पर चर्चा करेंगे। मेरे साथ एक कर्मठ छात्रा आराध्या है, जो इस टॉपिक पर मेरे प्रश्नों के उत्तर देगी। आराध्या क्या आप तैयार हो?

आराध्या: हां , मैं तैयार हूं!

सुजाता: बहुत बढ़िया अराध्या। आप बताइए कि First Person में क्या आता है?

आराध्या: Singular में I,My, Me और Plural में We, Our, Us

सुजाता: अच्छा, ये किसके लिए प्रयोग होते हैं?

आराध्या : ये वे शब्द हैं जो हम अर्थात् वक्ता अपने लिए प्रयोग करता या करते हैं। These are Pronouns used by a speaker to refer to himself or herself, or to a group including himself or herself.

सुजाता: बहुत बढ़िया अराध्या। अब बताइए कि Second Person के अंतर्गत कौनसे Pronoun आते हैं?

आराध्या: You, Your, You(जिसे हम संबोधित कर रहे हैं)! ये तीनों Singular और Plural में एक ही होते हैं?

सुजाता: सही बताया आराध्या। अब Third Person में कौनसे Pronouns आते हैं?

आराध्या: बोलने वाले और सुनने वाले से अलग सभी Third Person में आते हैं। ये हैं:-- He , His, Him (male के लिए) She , Her , Her (female के लिए) और It, Its, It जोकि Neuter Gender , Non-living things और pets के लिए प्रयोग होते हैं। इन तीनों के बहुवचन They, Their, Them होते हैं।

सुजाता: धन्यवाद आराध्या। बहुत ही बढ़िया प्रयास।

अमर शहीद संत रामानंद जी के शहीदी दिवस पर होगा सजेगा कीर्तन दरबार

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र । गुरु रविदास एतिहासिक अस्थान में 25 मई को कौम के अमर शहीद संत रामानंद जी महाराज के शहीदी दिवस पर कीर्तन किया जाएगा। जिसमे भाई रविंद्र रोहिला कलसाना वाले की गुरु रविदास जी महाराज की महिमा का बखान करेंगे। बता दें 24 मई 2009 को ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में सत्संग के दौरान समाज विरोधी लोगों द्वारा ताबड़तोड़ गोलियां बरसाई थी। जिसमे संत रामानंद जी महाराज शहीदी प्राप्त कर गए थे।

तुम आंख बंद किए हो, बुद्ध ने आंखें खोल ली हैं : ओशो

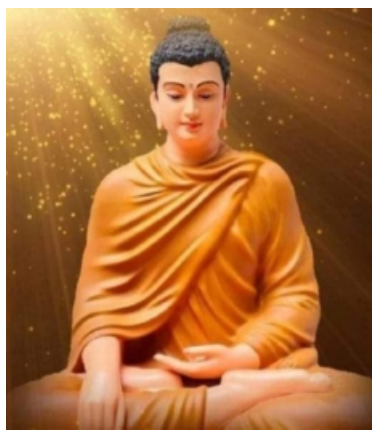

जिंदगी एक परीक्षण है। और जिंदगी एक निरीक्षण है। और जिंदगी प्रतिपल एक जागरण है। परीक्षा घट रही है प्रतिपल। न जागोगे, चूकते चले जाओगे। और न जागने की आदत बन जाए, तो अनंत काल तक चूकते चले जाओगे। और बहुत से रास्ते में स्थान मिलेंगे, जहां लगेगा कि मिल गयी मंजिल, और बहुत बार विश्राम करने का मन हो जाएगा, लेकिन जब तक परमात्मा ही न मिल जाए, या जिसको बुद्ध निर्वाण कहते हैं वही न- मिल जाए, तब तक रुकना मत। ठहर भले जाना, लेकिन ध्यान रखना कि कहीं घर मत बना लेना।

ता ब मंजिल रास्ते में मंजिलें थीं सैकड़ों
हर कदम पर एक मंजिल थी
मगर मंजिल न थी
ता ब मंजिल-उस सत्य की यात्रा के मार्ग पर
ता ब मंजिल रास्ते में मंजिलें थीं सैकड़ों

उस असली मंजिल के मार्ग पर बहुत सी मंजिलें मिलेंगी रास्ते में, कभी धन की, कभी पद की, कभी प्रतिष्ठा की, यश की, अहंकार बहुत से खेल रचेगा।

हर कदम पर एक मंजिल थी
मगर मंजिल न थी

और हर कदम पर मंजिल मिलेगी। लेकिन मंजिल इतनी सस्ती नहीं है। अगर बहुत होश रखा तो ही तुम इन मंजिलों से बचकर मंजिल तक पहुंच पाओगे। कठिन यात्रा है, दूभर मार्ग है? बड़ी चढ़ायी है। उतुंग शिखरों पर जाना है। घाटियों में रहने की आदत है। मूर्च्छित होना जीवन का स्वभाव हो गया है। होश कितना ही साधो, सधता नहीं। बेहोशी इतनी प्राचीन हो गयी है कि तुम होश का भी सपना देखने लगते हो बेहोशी में जैसे कोई रात नींद में सपना देखे कि जाग गया हूं। सपना देखता है कि जाग गया। मगर यह जागना भी सपने में ही देखता है। ऐसे ही बहुत बार तुम्हें लगेगा, होश आ गया। लेकिन होश रखना-

ता ब मंजिल रास्ते में मंजिलें थीं सैकड़ों
हर कदम पर एक मंजिल थी
मगर मंजिल न थी
कैसे पहचानोगे कि मंजिल आ गयी? कैसे पहचानोगे कि यह मंजिल-मंजिल नहीं है?

एक कसौटी खयाल रखना। अगर ऐसा लगे कि जो सामने अनुभव में आ रहा है, वह तुमसे अलग है, तो समझना कि अभी असली मंजिल नहीं आयी। प्रकाश दिखायी पड़े, अभी मंजिल नहीं आयी। कुंडलिनी जाग जाए अभी मंजिल नहीं आयी। ये भी अनुभव हैं। ये भी शरीर के ही अनुभव हैं, मन के अनुभव हैं। परमात्मा सामने दिखायी पड़ने लगे, याद रखना मंजिल नहीं आयी। क्योंकि परमात्मा तो देखने वाले में छिपा है, कभी दिखायी नहीं पड़ेगा। जो दिखायी पड़ेगा वह तुम्हारा सपना है।

इसको तुम सूत्र समझो : जो दिखायी पड़े, अनुभव में आए, वह सपना। जिस दिन कुछ दिखायी न पड़े, कुछ अनुभव में न आए; केवल तुम्हारा चैतन्य रह जाए, देखने वाला बचे; दृश्य खो जाएं, द्रष्टा बचे; दृश्य खो जाएं, कुछ दिखायी न पड़े, बस तुम रह जाओ; ना-कुछ तुम्हारे चारों तरफ हो- इसको बुद्ध ने निर्वाण कहा है-शुद्ध चैतन्य रह जाए; दर्पण रह जाए, प्रतिबिंब कोई न बने; तब तुम भोग के बाहर गए। अन्यथा सभी अनुभव भोग हैं। कोई किसी पत्नी को भोग रहा है; कोई क्या बांसुरी बजा रहे हैं, उनके दृश्य को भोग रहा है। सब भोग है। जहां तक दूसरा है, वहां तक भोग है। जब तुम बिलकुल ही अकेले बचो, शुद्धतम कैवल्य रह जाए, होश मात्र बचे-किसका होश, ऐसा नहीं; चैतन्य मात्र बचे-किसकी चेतना, ऐसा नहीं; कुछ जानने को न हो, कुछ देखने को न हो, कुछ अनुभव करने को न हो-उस घड़ी आ गयी मंजिल।

और ये तीन सूत्र बहुमूल्य हैं। बुद्ध कहते हैं, वासना दुष्पूर है-स्वभाव की ओर इंगित करते। उपनिषद कहते, जिन्होंने भोगा उन्होंने त्यागा-परिणाम की ओर इंगित करते। मैं कहता हूं न भोगो न त्यागो, जागो- मैं विधि देता हूं कि कैसे तुम जानोगे कि बुद्ध ने जो कहा, सही है, कैसे तुम जानोगे कि उपनिषद ने जो कहा, सत्य है। तुम जानोगे तभी उपनिषद सच होंगे। तुम जानोगे तभी बुद्ध सच होंगे। तुम्हारे जानने के अतिरिक्त न तो बुद्ध सच हैं, न उपनिषद सच हैं। तुम्हारा बोध ही प्रमाण होगा बुद्ध की सचाई का।

इसलिए बुद्ध ने कहा है-किसी ने पूछा कि हम कैसे तुम्हारा सम्मान करें, हम कैसे कृतज्ञता-ज्ञापन करें, इतना दिया है- बुद्ध ने कहा है, मैंने जो कहा है तुम उसके प्रमाण हो जाओ, मैंने जो कहा है तुम उसके गवाह हो जाओ, बस मेरा सम्मान हो गया। और कुछ धन्यवाद की जरूरत नहीं है।

तुम जिस दिन भी बुद्ध के गवाह हो जाओगे, जिस दिन तुम प्रमाण हो जाओगे कि उपनिषद जो कहते हैं सही है, उसी दिन तुमने उपनिषद को जाना, उसी दिन तुमने बुद्ध को पहचाना। फर्क बहुत ज्यादा नहीं है बुद्ध में और तुममें। उपनिषद में और तुममें फर्क बहुत ज्यादा नहीं है। ऐसे बहुत ज्यादा मालूम होता है। ऐसे जरा भी ज्यादा नहीं है। फर्क बड़ा थोड़ा है। तुम सोए हो, बुद्ध जागे हैं। तुम आख बंद किए हो, बुद्ध ने आंखें खोल ली हैं।

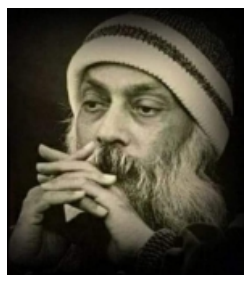

ओशो
एस धम्मो सनंतनो (प्रवचन--02)
(अस्तित्व की विरलतम घटना:सदगुरु)

क्या बुद्ध मायावी थे ?

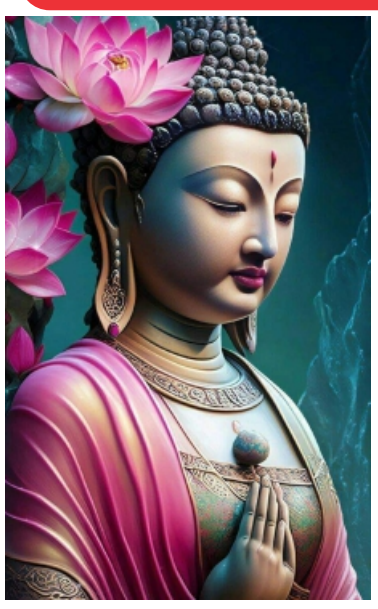

भगवान बुद्ध ने जो संकल्प लिया था, पूरा किया। जो सपना देखा था जीते जी पूरा हुआ। दुनिया में किसी भी विचारधारा या धर्म का संस्थापक अपने जीते ऐसा नहीं कर पाया।

तो क्या बुद्ध मायावी थे? क्या बुद्ध जादूगर थे, चमत्कारी थे? दूसरी मान्यता के लोग तो उनको यही समझते थे. आखिर बुद्ध के पास क्या था? जिसके कारण सम्राट हो या धनी वणिक। क्या विद्वान और क्या ब्राह्मण, सब खींचे चले आये और शरणागत हुए।

अद्भुत दौर था वह। जिसने भी बुद्ध को एक बार सुना वह सारी सुध बुध खो बैठा। एक बार आया तो फिर लौट कर नहीं गया।

वाराणसी के नगर सेठ का पुत्र यश। क्या नहीं था उसके पास, अपार धन दौलत। लेकिन एक चीज नहीं थी, मन की शांति। वह उसे बुद्ध के पास मिली, तो वह फिर घर जाने का रास्ता ही भूल गया।

उरुवेला के आचार्य कश्यप बंधुओं का बड़ा नाम था, हजारों शिष्य थे लेकिन अपनी सारी परंपराओं व शास्त्रों को छोड़कर बुद्ध की शरण गए।

धनी ब्राह्मण परिवार के सारिपुत्र ने तो बुद्ध को देखा तक नहीं था। बुद्ध के शिष्य अश्वजीत से भगवान की सिर्फ एक गाथा सुनी थी। सारिपुत्र अपने मित्र मौग्लायायन के साथ बुद्ध के पास खींचे चले गये और दोनों धम्म सेनापति कहलाए।

कुरु जनपद के धनी युवा राष्ट्रपाल ने एक बार बुद्ध की अमृतवाणी क्या सुनी, अपार धन वैभव को त्यागने के लिए छटपटाया। भिक्षु बनने के लिए सात दिन तक कड़ी धूप में सत्याग्रह किया। आखिर बुद्ध, धम्म और संघ की शरण जाकर ही चैन मिला।

हजार हत्याएं करने वाला डाकू अंगुलिमाल बुद्ध के एक शब्द पर क्यों जाग उठा? खड्ग फेंक कर क्यों शरणागत हुआ?

जैसे आकाश में चंद्रमा की शीतल रोशनी के चारों ओर तारे चमकते हैं वैसे ही बुद्धत्व प्राप्ति के कुछ ही साल में बुद्ध के चारों ओर हजारों विद्वान अनमोल भिक्षु संघ में आ गए। उनमें अधिकतर ऐसे थे जिनके पास सब कुछ था.. लेकिन बुद्ध के पास क्या था? बुद्ध के पास था सत्य। संसार के सभी प्राणियों के प्रति प्रेम, करुणा और मैत्री की मधुर वाणी।

इतिहास में बुद्ध के समान दूसरा कोई नहीं है। वह सत्यवादी और व्यवहारवादी थे। अंदर बाहर एक जैसे। जो मार्ग उनके खुद के लिए ठीक था, वही दूसरों के लिए सही समझा। वह सभी को उसी मार्ग पर लेकर गये।

जब पुत्र राहुल ने पिता से विरासत मांगी, राज्य का उत्तराधिकार चाहा तो बुद्ध ने धम्म का साम्राज्य देकर राहुल को भिक्षु बनाया। सौतेले भाई नंद को सांसारिक दुख में पड़ने से पहले ही अपना भिक्षा पात्र थमाकर पीछे चलने की आज्ञा दी और वह ऐसा चला गया कि वापस महल आने का होश ही नहीं रहा।

जिन्होंने भी बुद्ध की अमृतवाणी सुनी, एक ही झटके से सब कुछ छोड़ कर बुद्ध के पास चले आए। फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। जो त्याग दिया सो त्याग दिया, उसकी ओर मुड़कर क्या देखना। आखिर बुद्ध के पास क्या था?

बुद्ध के पास सत्य था. प्रेम, करुणा मैत्री का महासागर.. शील, समाधि और प्रज्ञा का मार्ग। यही उनका बताया हुआ धम्म मार्ग है, मुक्ति का मार्ग है। यही सुख-शांति के जीवन का मार्ग है।

भवतु सब्बं मंगलं,सबका मंगल हो..
सभी प्राणी सुखी हो

आलेख: डॉ. एम एल परिहार, जयपुर

शहरों की तर्ज पर ग्रामीण आंचल का विकास करना सरकार का मुख्य लक्ष्य : देवेंद्र

हरियाणा के विकास एवं पंचायत मंत्री देवेंद्र सिंह बबली का गांव हरिगढ़ भौरख में सरपंच एसोसिऐशन की तरफ से किया गया जोरदार स्वागत

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । हरियाणा के विकास एवं पंचायत मंत्री देवेंद्र सिंह बबली ने कहा कि शहरों की तर्ज पर ग्रामीण आंचल का विकास करना मुख्य लक्ष्य है। इस लक्ष्य के तहत गांव में पीने के पानी, सडके, गलियां, पानी निकासी के प्रबंध, तालाबों को अमृत सरोवर बनाना जैसे विकास कार्यों को पूरा किया जाएगा। इस प्रदेश के गांव की तस्वीर को छोटी सरकार सरपंचों के साथ मिलकर बदला जाएगा और सभी मिलकर गांव का विकास करने के साथ-साथ सरकार की योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जाएगा।

हरियाणा के विकास एवं पंचायत मंत्री देवेन्द्र बबली वीरवार को देर सायं पिहोवा के गांव हरिगढ भौरख में हरियाणा विकासशील सरपंच एसोसिऐशन की तरफ से आयोजित सम्मान समारोह में बतौर मुख्यातिथि के रूप में बोल रहे थे। इससे पहले कैबिनेट मंत्री देवेंद्र बबली ने गांव हरिगढ़ भौरख में सीवरेज पाईपलाईन के निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इससे पहले कैबिनेट मंत्री देवेन्द्र बबली का गांव के सरपंच कमल काजल ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इसके बाद सिख समाज की तरफ से गुरमीत सिंह, हरजिन्द्र सिंह, लखविन्द्र सिंह ने पगडी पहनाकर, नंबरदार नसीब सिंह ने स्मृति चिन्ह देकर कैबिनेट मंत्री का स्वागत किया। इसके अलावा सैनी समाज,कश्यप समाज, वाल्मिकि समाज ने भी कैबिनेट मंत्री का स्वागत किया। इस सम्मान समारोह के बाद नंबरदार नसीब सिंह, अंग्रेज सिंह काजल, जरनैल सिंह, सुरेन्द्र काजल, मनजीप काजल,कुलदीप काजल, संदीप काजल व सुरजीत काजल ने कैबिनेट मंत्री का फूलों की बडी माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया।

कैबिनेट मंत्री देवेंद्र सिंह बबली ने कहा कि ग्रामीण आंचल का सर्वांगीण विकास करना ही है सरकार का मुख्य लक्ष्य है। गांव में मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ई-लाईब्रेरियां स्थापित की जा रही हैं। वर्तमान सरकार में विकास के लिए जितना पैसा मंजूर किया जा रहा है, वह पूरे का पूरा धरातल पर लगाया जाना सुनिश्चित किया गया है और भ्रष्टाचार को समाप्त करने की दिशा में अनेकों कदम उठाए गए हैं। आज एक बड़ा बदलाव प्रदेश में आया है, जिसके तहत पूरा पैसा धरातल पर लगाया जा रहा है, जबकि इससे पूर्व की सरकारों के राज में ऐसा नहीं होता था और पैसा खुर्द-बुर्द कर दिया जाता था। इस व्यवस्था को रोकने के लिए सरकार द्वारा कड़े कदम उठाए गए और यह सुनिश्चित किया गया है कि सारा पैसा विकास कार्यों के लिए लगे। प्रदेश में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए ई-टैंडरिंग व्यवस्था से विकास कार्यों को करने की पोलिसी भी बनाई गई अब विकास कार्यों को इस व्यवस्था से करने के लिए सरपंचों ने विकासशील एसोसिएशन बनाई है और सहमत होकर सरकार के साथ खड़े हैं। महिलाएं सरपंच आगे आकर जिम्मेदारी से विकास कार्यों में अपनी अहम भूमिका निभाएं।

कैबिनेट मंत्री देवेंद्र बबली ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल तथा उप-मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के नेतृत्व में प्रदेश का सर्वांगीण विकास हो रहा है। प्रदेश की जनता ने बड़ी उम्मीद से सरपंचों व जन प्रतिनिधियों को चुना है। हम सबका फर्ज बनता है कि उनकी आशाओं को खरा उतरें। सरकार के पास विकास कार्यों के लिए धन की कोई कमी नहीं है। हरियाणा कृषि उद्योग निगम के चेयरमैन कुलदीप मुल्तानी ने मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा कि गांवों में प्रदेश सरकार की तरफ से तेजी के साथ विकास कार्य करवाए जा रहे है। इस कार्यक्रम में जजपा के वरिष्ठ नेता प्रोफेसर रणधीर सिंह, जेजेपी के जिला अध्यक्ष कुलदीप जखवाला, जेजेपी के युवा अध्यक्ष डा. जसविन्द्र सिंह खैरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हरिगढ भौरख की छात्राओं ने गीता स्वागत गीत और हरियाणवी गीत की प्रस्तुति देकर सबका मन मोह लिया और स्काउट के बच्चों ने मेहमानों का परम्परा अनुसार स्वागत भी किया।

इस मौके पर सरपंच रणदीप सिंह, सरपंच जरनैल सिंह, रविन्द्र काजल, गुरूलाल सिंह, तेजा राम, एआईएनएसओ के जिला अध्यक्ष बब्लू काजल सहित गणमान्य लोग मौजूद थे।

टैक्स एकमुश्त जमा करवाने पर मिलेगी ब्याज में 30 प्रतिशत छूट : नरवाल

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी देवेंद्र नरवाल ने कहा कि जो शहरवासी 31 जुलाई तक अपना बकाया प्रॉपर्टी टैक्स नगर परिषद की गृहकर शाखा में एकमुश्त जमा करवाएगा उसे सरकार की तरफ से ब्याज पर 30 प्रतिशत की छुट मिलेगी। इसके अलावा सरकार ने प्रॉपर्टी टैक्स के चालू बिलों पर भी 10 प्रतिशत की छूट पहले से ही करदाताओं को दी हुई है। इसलिए जिन करदाताओं का प्रॉपर्टी टैक्स बकाया है वे तुरंत सरकार की इस स्कीम का फायदा उठाते अपना टैक्स जल्द से जल्द जमा करवाएं। सरकार की इस योजना से ऐसे करदाताओं को फायदा होगा जो किसी कारणवश प्रॉपर्टी टैक्स जमा नहीं करवा पाए थे।

उन्होंने बताया कि नगर परिषद की गृहकर शाखा जो अब न्यू मिनी सचिवालय की तीसरी बिल्डिंग में स्थित है वहां जाकर लोग अपना टैक्स जमा करवा सकते हैं। यदि कोई करदाता ऑनलाईन अपना टैक्स जमा करवाना चाहता है तो वह विभाग के एनडीसी पोर्टल पर अपनी प्रॉपर्टी आईडी दर्ज करने के बाद मेक माई पेमेंट ऑप्शन पर जाकर ऑनलाईन पेमेंट कर टैक्स जमा करवा सकते हैं। वर्ष 2022-2023 की संपत्ति कर 25045842 रुपए की धनराशि जमा हुई थी, जबकि चालू वित्त वर्ष में 1 अप्रैल से 9 मई तक 1528825 रुपए की धनराशि सरकार के खजाने में आ चुकी हैं। ऐसे में उम्मीद है कि सरकार की ओर से छूट की घोषणा के बाद सरकारी खजाने में ओर ज्यादा राशि का ईजाफा होगा। उन्होंने बताया कि नगर परिषद की ओर से जल्द ही टैक्स भरने के लिए करदाताओं को नोटिस भी दिए जाएंगे, लेकिन कर दाता नोटिस का इंतजार न करते हुए अपनी प्रॉपर्टी आईडी के जरिए अपना टैक्स जमा करवा दें।

कार्यकारी अधिकारी देवेंद्र नरवाल ने कहा कि जनहित को देखते हुए प्रत्येक करदाता का यह नैतिक कर्तव्य भी बनता है कि वह समय पर अपना टैक्स जमा करवाएं। क्योंकि टैक्स से अर्जित होने वाली आय के आधार पर विकास कार्यों का खाका तैयार किया जाता है। इस पैसे से ही नागरिकों को मूलभूत सुविधाएं दी जाती हैं, जिसका फायदा आपको ही मिलेगा। इसलिए सभी कर दाता सरकार की इस स्कीम का फायदा उठाएं। नरवाल ने केंद्र व राज्य सरकार के अन्य विभागों से भी अपील की है कि वे भी अपना बकाया प्रॉपर्टी टैक्स नगर परिषद के खजाने में जल्द से जल्द से जमा करवाएं।

उचाना हलका के 17 गांवों को पीने के लिए जल्द मिलेगा भाखड़ा का नीला पानी

उचाना के बस अड्डा के नवीनीकरण पर खर्च होंगे 70 लाख रुपए : दुष्यंत चौटाला

50 करोड़ रुपए खर्च कर पाईप बिछाने का कार्य शुरू

गजब हरियाणा न्यूज/राममेहर

नरवाना/उचाना । उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने कहा है कि उचाना विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक गांवों में निरन्तर चहुमुखी विकास करवाया जा रहा है। निकट भविष्य में उचाना प्रदेश के विकसित क्षेत्रों में शुमार होगा। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि काफी अर्सा से उचाना शहरवासियों की सर्विस लेन की मांग भी पूरी हो जाएगी। इसके साथ ही बस अड्डा के नवीनीकरण के लिए भी 70 लाख रुपए परिवहन विभाग द्वारा लोक निर्माण विभाग को दे दिए गए है, इस पर अगले महीने में टेंडरिंग प्रक्रिया पूरी होने के साथ ही निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा। उपमुख्यमंत्री ने ये विचार अपने विधानसभा क्षेत्र के गांव अलिपुरा में जनसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के युवा खिलाड़ियों को खेल प्रतिभा निखारने के अवसर प्रदान करने हेतु एक बड़ा इंडोर खेल स्टेडियम का निर्माण भी करवाया जाएगा, इसके लिए क्षेत्र में तीन प्वाइंट चयनित किए गए है जहां भी सभी प्रकार के मापदण्ड व औपचारिकताएं पुरी होगीं, वहीं एक जगह इस स्टेडियम का निर्माण करवाया जाएगा। इसके अलावा क्षेत्र में रकबी व कबड्डी के खिलाड़ियों को भी उचित खेल सुविधा प्रदान करने के लिए उचाना में खेल नर्सरी बनवाने पर विचार किया जा रहा है।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि हलका वासियों को स्वच्छ पेयजल मुहैया करवाना उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है। इसके लिए हाईवे से विपरीत दिशा में लगते 17 गांवों के लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए 50 करोड़ रुपए की लागत से पाईप लाईन बिछाकर भाखड़ा का नीला पानी दिया जाएगा। इसके अलावा हलका के गांव गुरुकुल खेड़ा के प्रत्येक घर में सीएसआर के सहयोग से सोलर पैनल लगवाने का कार्य शुरू हो चुका है जो अगले करीब तीन- चार महीनें में पुरा हो जाएगा, इस कार्य के पुरा होने से सौलर पैनल ऊर्जा आपूर्ति के तौर पर गुरुकुल खेड़ा प्रदेश का मॉडल गांव साबित होगा। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि बीपीएल राशन कार्ड धारकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार द्वारा अब बिजली बिल की सीमा 9 हजार रुपए से बढ़ाकर 12 हजार रुपए सालाना की गई है, अब निर्धारित सालाना बिजली भी वाले व्यक्ति भी बीपीएल की श्रेणी में शामिल हो सकेंगे।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि मौजूदा गठबंधन राज्य सरकार के लिए किसान हित सर्वोपरि हैं। इसी दिशा में अब किसानों को अपनी फसल बेचने के लिए पहले की तरह मंडियों में कई- कई रात नहीं बितानी पड़ती बल्कि मेरी फसल- मेरा ब्यौरा पोर्टल पर रजिस्टर्ड किसान की फसल की खरीदारी मंडी में आते ही हो जाती है साथ फसल बिक्री के 72 घंटे के अन्दर रकम अदायगी सीधा किसान के खाते में की गई है। उपमुख्यमंत्री ने शुक्रवार को अपने दौरे के दौरान अलिपुरा के अलावा ब्रहामण धर्मशाला उचाना, गुरुकुल खेड़ा, काब्रछा, सुदकैन खुर्द, सुदकैन कलां तथा लोधर में भी ग्रामीण सभाओं को संबोधित किया और जन समस्याएं सुनी। उन्होंने प्रत्येक गांव में पंचायतों द्वारा रखी मांगों पर बोलते हुए कहा कि नियमानुसार तकनीकी औपचारिकताएं एवं फिजिबिलिटी सही पाए जाने वाले सभी मांगों को पूरा करवा दिया जाएगा।

उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने अपने ग्रामीण दौरे के दौरान लगाई घोषणाओं की झड़ी

अलीपुरा गांव में मौके पर ही उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने ग्रामीणों की मांग पर उचाना के एसडीएम को परिवार पहचान पत्र व अन्य सुविधाओं के लिए दो दिन विशेष कैंप लगाने के निर्देश दिए। गांव गुरुकुल खेड़ा में ई-लाइब्रेरी तथा पंचायत द्वारा जमीन देने पर ग्राम सचिवालय के निर्माण की भी घोषणा की। साथ ही उपमुख्यमंत्री ने एसडीएम को निर्देश दिए कि गुरुकुल खेड़ा में चल रहा पंचायती जमीन का मामला तुरंत निपटाएं ताकि पेयजल के लिए टैंक बनाने की प्रक्रिया शुरू की जा सके। उपमुख्यमंत्री ने काब्रछा गांव में अगले सीजन के लिए पीआर परचेज सेंटर बनाने की घोषणा की और साथ ही इसकी चार दिवारी के निर्माण के लिए कहा। गांव में ई- लाईब्रेरी, पंचायत द्वारा जमीन उपलब्ध करवाने पर सामुदायिक केन्द्र के निर्माण की भी घोषणा की साथ ही इस गांव में बुजुर्गों और दिव्यांगों की पैंशन बनाने के लिए एसडीएम उचाना को दो दिन का दो दिवसीय कैम्प लगाने के निर्देश दिए। सुदकैन कलां गांव में ग्रामीणों द्वारा उपमुख्यमंत्री का जोरदार स्वागत किया गया और ग्रामीणों की मांग पर बैंक के कर्मचारी को गांव में ही आकर बुजुर्गों को पेंशन बांटने के लिए कहा। उपमुख्यमंत्री ने सुदकैन कलां में चौपाल को ऐतिहासिक धरोहर बताते हुए इसके सौंदर्यीकरण के लिए 30 लाख रुपए का अनुदान स्वैच्छिक कोष से देने की घोषणा की। इससे पहले चौपाल निर्माण के लिए दस लाख रूपये की अनुदान राशि दी जा चुकी है। सुदकैन कलां में जल्द ही ई- लाइब्रेरी बनाने और स्वच्छ पेयजल के अधिकारियों को प्रपोजल बनाकर भेजने के लिए कहा।

प्रत्येक गांव में उपमुख्यमंत्री का ग्रामीणों ने पगड़ी, पुष्पगुच्छ व फूल मालाओं से जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर उचाना के एसडीएम जितेन्द्र जोशी, बीडीपीओ सुरेन्द्र खत्री, डीएफएससी निशांत राठी, जजपा हल्का प्रधान विश्व वीर उर्फ काला नम्बरदार व शमशेर नंगूरा, उपमुख्यमंत्री के निजी सचिव प्रो. जगदीश सिहाग, युवा प्रधान बिट्टू नैन, साहब राम छातर सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

बदलाव सोसाइटी ने बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर किया माता सावित्री बाई फुले पुस्तकालय का उद्घाटन

रक्तदान शिविर का आयोजन कर किया 102 यूनिट रक्त एकत्रित

समाजसेवी संस्थाएं निश्वार्थ भाव से कार्य करें तो भारत फिर से एक अलग पहचान बनाएगा : डॉ आर. आर. फुलिया

डॉ राजरूप फुलिया ने की 500 पुस्तकें भेंट

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कैथल । बदलाव सोसाईटी द्वारा बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर डॉ भीम राव अंबेडकर बहुआयामी शिक्षण संस्थान में माता सावित्री बाई का पुस्तकालय का उद्घाघाटन किया। और रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमे 102 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप से हरियाणा के पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं सेवानिवृत आईएएस डॉ आर.आर फुलिया पहुंचें। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ जगबीर सिंह रिटायर्ड सीएमओ, डॉ विनोद कुमार डायरेक्टर एमडीएम ग्लोबल स्कूल रहे। डॉ राज रूप फुलिया जी ने पुस्तकालय के उद्घाटन पर 500 पुस्तकें भेंट की। डॉ फुलिया ने 9 अप्रैल को डॉ भीम राव अंबेडकर जी और महात्मा ज्योतिबा फुले जी की जयंती पर संस्थान में आर्थिक सहयोग के रूप एक लाख रुपए की राशि दी थी।

इस अवसर पर डॉ राजरूप फूलिया ने कहा की बदलाव सोसाइटी द्वारा आज बुद्ध पूर्णिमा तथागत बुद्ध के जन्म, ज्ञान व महापरिनिर्वाण दिवस पर जरूरतमंद छात्रों के लिए शिक्षा ज्ञान व बुद्धि विस्तार के लिए पुस्तकालय की स्थापना करना सराहनीय है। जो मानवता के कल्याण के लिए सबसे बड़ा परमार्थ हैं। असल में बदलाव सोसाइटी समाज में बदलाव लाने की दिशा में कार्य कर रही है। आने वाले समय में इसका प्रभाव देखने को मिलेगा। उन्होंने कहा देश प्रदेश की सभी समाजसेवी संस्थाएं अगर निश्वार्थ भाव से कार्य करें तो भारत विश्व के सभी देशों में फिर से एक अलग पहचान बनाएगा। जो भी देश आज विकसित देश है उन सबने तथागत बुद्ध की शिक्षा अपनाया।

डॉ भीमराव अंबेडकर बहुआयामी संस्थान की मुख्य विशेषता

डॉ भीमराव अंबेडकर बहुआयामी संस्थान में विभिन्न परीक्षाओं के लिए ऑनलाईन और ऑफलाईन प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके लिए डिजिटल रूम भी तैयार किया गया जो पूरी तरह से एसी है। 48 छात्रों के बैठने की व्यवस्था है। निशुल्क वाई फाई, 24 घंटे बिजली, शांत वातावरण, सुंदर पार्क तैयार किया गया है। प्रशिक्षण के लिए मात्र सौ रूप शुल्क रखा गया है।

इस मौके पर मनोज पंवार, अनिल सिरोही, मनोज बामणिया, देवेंद्र सिरोही, गुरमेल सिंह, कुमारी पिंकी, अशोक मेहरा, सतीश गहलोत, प्रदीप कुमार, प्रकाश चन्द, डॉ ईश्वर, विक्रम मौजूद रहे।

बेगमपुरा मानव सेवा ट्रस्ट ने परीक्षाओं में अव्वल रहने वाले छात्रों को किया सम्मानित

शिक्षा के द्वारा ही अच्छे भारत का निर्माण किया जा सकता है : रमेश थाना

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र । बुद्ध पुर्णिमा पर गांव सुनहरी खालसा में बेगमपुरा मानव सेवा ट्रस्ट की ओर से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में परीक्षाओं में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानाचार्य रमेश थाना ने छात्रों को शिक्षा के बारे में प्रेरित किया और कहा कि छात्रों को ज्यादा से ज्यादा शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, जिससे एक अच्छे भारत का निर्माण किया जा सके। बेगमपुरा टाइगर फोर्स हरियाणा के प्रधान सुनील चमारा ने छात्रों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करते हुए घटते पानी के स्तर पर पानी बचाने के लिए बच्चों को जागरूक किया। उपप्रधान अशोक सुनेहडी ने छात्रों को नशे से दूर रहने और छात्रों को स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम के लिए प्रेरित किया। दिनेश खापड ने छात्रों को आपस में प्रेम भाव रखने और पौधारोपण के लिए प्रेरित किया। बेगमपुरा मानव सेवा ट्रस्ट द्वारा छात्रों को लेखन सामग्री देकर सम्मानित किया। इस मौके पर प्रवक्ता रजत बाल्मीकि, सदस्य राजू अमीन, सामाजिक कार्यकर्ता राजेश राठी, मास्टर सुरजीत आलमपुर, जगमाल, ठेकेदार लख्मीचंद, रामभज काजल, संजीव मेहरा, एडवोकेट रिंकू काजल, संजय मेहरा, आयुष मेहरा, ताराचंद, शिवम मेहरा, अनिकेत मेहरा, सागर काजल, हार्दिक मेहरा आदि मौजूद रहे।

सच्चा गुरुमुखी कभी चौरासी लाख जुनियों में नही जाता : संत जैनदास

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

करनाल । रविवार को करनाल जिले के गांव जनेसरों में पूर्व सरपंच सुनील कुमार के पुत्र प्रवेश कुमार 14 मार्च को गुरु चरणों में लीन हो गए थे। उनकी पावन याद में श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। इस मौके पर संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी महाराज के पावन दीवान दरबार साहिब डेरा दयालगढ़ यमुनानगर हरियाणा से संत जैन दास हितकारी जी की पावन सरपरस्ती में सजाए गए। इस दुख की घड़ी में डेरा सचखंड बल्ला पंजाब से श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज के आदेशानुसार संत वीरेंद्र दास बब्बू शामिल हुए। अमृतवाणी के जाप कराए गए। संत जैनदास जी ने कहा की आत्मा अजर अमर है। यह शरीर नश्वर है मरने के बाद यह शरीर ब्रह्मांड में समा जाता और आत्मा परमात्मा में मिल जाती है। एक सच्चा गुरुमुखी कभी चौरासी लाख जूनियों में नही जाता। वह प्रभु चरणों में चला जाता है।

मंच संचालन स्वामी चरण पंचकुला द्वारा किया गया। संत गुरपाल दास जी महाराज लाडवा दरबार साहिब, संत जसबीर दास जलमाना, चमन दास प्रचारक डेरा दयाल गढ़ दरबार साहिब, डॉ. मिश राम मधुवाला, अनिल कुमार खिजरी, मा. संजीव इस्माइलपुर, जोनीकुमार मंडेबर सहित हजारों की तादाद में संगत समाज उपस्थित होकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। पुत्र प्रवेश की आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन धारण किया गया। संत जसबीर सिंह के द्वारा अरदास की गई। समूह साध संगत जी को गुरु लंगर प्रसाद बरताया गया।

देसु राम ने संभाला कुरुक्षेत्र डाक मण्डल के अधीक्षक का कार्यभार

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । डाक मण्डल में नए अधीक्षक डाकघर के पद पर देसु राम ने कार्यभार संभाल लिया है। बता दें कि 31 दिसंबर 2022 को तारा चंद के सेवानिवृति के बाद से इस पद पर अरुण गोयल अधीक्षक डाकघर अंबाला, अधीक्षक डाकघर कुरुक्षेत्र का अतिरिक्त कार्यभार संभाल रहे थे।

कुरुक्षेत्र डाक मण्डल के अंतर्गत कुरुक्षेत्र और कैथल जिले के कुल मिलाकर 36 बड़े उपडाकघर व 199 शाखा ड़ाक घर हैं । बात करने पर बताया गया कि देसु राम इस क्षेत्र से पहले से ही जानकर हैं क्योंकि वे पहले भी उप सहायक अधीक्षक के तौर पर इस मण्डल मे कार्य कर चुके हैं। मण्डल मे स्टाफ के बहुत से कर्मचारीयों की कार्यशैली व कर्मठता से अच्छी तरह वाकिफ है। उन्होने कहा कि सभी कर्मचारियों के सहयोग से वे विभाग के व्यापारिक टारगेट प्राप्त करने व ग्राहकों को बेहतर सेवा देने का पूरा प्रयास करेंगे ।

इस अवसर पर कर्मचारी संगठन आल इंडिया पोस्टल एम्प्लोयीज असोसिएशन (ग्रुप सी) के सदस्यों ने देसू राम को फूलों का गुलदस्ता देकर उनका स्वागत किया और उनके इस नए पद के लिए शुभकामनाएँ दी और साथ मे आश्वासन दिया कि मण्डल के कर्मचारी आपके दिशा निर्देशों पर और और मेहनत करके हरियाणा मे ही नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष मे कुरुक्षेत्र डाक मण्डल का नाम रोशन करेंगे ।

इस अवसर पर प्रवीन अरोडा सहायक अधीक्षक के साथ-साथ कृष्ण कुमार डाकपाल, शगौरव शर्मा एचआईजी -1 लेखा व एआईपीईयू ग्रुप 'सी' यूनियन के आडिटर, कुलवंत सिंह ट्रेनिंग इंस्ट्रक्टर व यूनियन के मण्डल सचिव, बलजीत सिंह एसपीएम लाडवा व यूनियन के प्रधान, वेद प्रकाश उप डाकपाल पिपली, दिनेश कुमार डाक सहायक, जितेंद्र सिस्टम मैनेजर इत्यादि मौजूद रहे।

डॉ अम्बेडकर युवा मंच ने किया सम्मान समारोह आयोजित

डॉ भीमराव अम्बेडकर पुस्तकालय में पढकर 10 सालों 35 युवाओं को मिली सरकारी नौकरी

गजब हरियाणा न्यूज

कैथल । डॉ भीमराव अम्बेडकर युवा मंच बडसीकरी कलां द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन किया। जिन छात्रों ने डॉ अम्बेडकर पुस्तकालय में वर्ष 2023 से पढ़कर सरकारी नौकरी पर लगे ।उनको सम्मानित किया गया। पुस्तकालय के संरक्षक समाजसेवी गुरूदेव अम्बेडकर ने बताया कि डॉ भीमराव अम्बेडकर पुस्तकालय लगभग 10 सालों से शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान कर रहा है। जिसमें पढकर 35 से ज्यादा युवाओं को सरकारी नौकरी मिली। प्रभारी मदनलाल, कुलदीप धानिया ने बताया कि 2023 में डॉ अम्बेडकर पुस्तकालय से तीन बच्चों का सरकारी नौकरी में सिलेक्शन हुआ है। मंच कि तरफ से उन सभी साथियों को सम्मानित करने के लिए यह कार्यक्रम रखा गया, ताकि गांवों के युवाओं को प्रेरणा मिले।

प्रधान प्रवीन धानिया ने बताया कि पुस्तकालय में वह सभी सुविधाएं हैं जो बच्चों को तैयारी करने के लिए चाहिए। इस अवसर पर सुरेन्द्र जांगड़ा, मनीष कश्यप, प्रवीन जांगड़ा, राहुल धानिया, संदीप कश्यप, विक्रम धानिया, गुरमीत धानिया, मोहित राठी, आंनद आदि मौजूद थे।

जय भगवान शर्मा भाजपा के कर्मठ और मेहनती योद्धा : धनखड़

लव जिहाद पर करारा प्रहार है दी केरला स्टोरी

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र । भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ओमप्रकाश धनखड़ ने कहा की केरला स्टोरी को पाकिस्तान प्रायोजित आई एस आई द्वारा केरला की संख्या बहन बेटियों का ब्रेनवाश कर उन्हें आतंकी गतिविधियों में प्रयोग कर उन्हें प्रताड़ित करने की पोल खोलने वाली फिल्म है जिन राज्यों में इस फिल्म के प्रदर्शन पर रोक लगाई गई है उन्होंने उन राज्यों की निंदा की।

प्रदेश अध्यक्ष वीरवार को भाजपा के वरिष्ठ नेता जय भगवान शर्मा डीडी के आवास पर पत्रकारों से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि लव जिहाद के नाम पर बहन बेटियों को बहलाकर दी केरला स्टोरी में जो राष्ट्र विरोधी षड्यंत्र रचा गया, यह फिल्म उसका काला चिट्ठा है।

धनखड ने आमजन से दी केरला

स्टोरी देखने की अपील की।

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश अध्यक्ष ओमप्रकाश धनखड़ ने डीडी शर्मा के आवास पर उमड़े भारी जनसैलाब और उत्साहित पार्टी कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों को आम जन तक पहुंचाएं।

उन्होंने जय भगवान शर्मा से प्रभावित होकर कहा कि जय भगवान शर्मा डीडी जैसे कर्मठ और मेहनती कार्यकर्ताओं की बदौलत ही भाजपा देश और प्रदेश में तीसरी सरकार बनाने की ओर बढ़ रही है।

खंडो-ब्रह्मांडो का मालिकेकुल ओत-प्रोत सृष्टि के कण-कण मे रसा और बसा : स्वामी ज्ञाननाथ

उसे समय के हाकिम ब्रह्मनिष्ठ तत्वदर्शी की दया-मेहर से जान और पहचान सकते हैं : महामंडलेश्वर

गजब हरियाणा न्यूज/राहुल

अम्बाला। निराकारी जागृति मिशन नारायणगढ के गद्दीनशीन चेयरमैन और संत सुरक्षा मिशन भारत के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री.श्री.1008 महामंडलेश्वर एडवोकेट स्वामी ज्ञान नाथ ने सत्संग के दौरान रुहानी प्रवचनो मे फरमाया कि खंडो-ब्रह्मांडो का मालिकेकुल यह ओत-प्रोत सृष्टि के कण-कण मे रसा और बसा हुआ सर्वव्यापक जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार परमात्मा अजन्मा, अंनत, हमेशा ज्यों-का-त्यों, अडिग-अडोल, सर्वेसर्वा, सबकुछ करने मे समरथ, अपने आप मे हर तरह से परिपूर्ण, कर्ता, धर्ता, अपनेआप मे स्वतंत्र, सदा सर्वदा मुक्त और सत-चेतन-आनद स्वरुप है। इस परम तत्व को सिर्फ और सिर्फ समय के हाकिम ब्रह्मनिष्ठ तत्वदर्शी की दया-मेहर से जान और पहचान सकते, सतगुरु के द्वारा ब्रह्मज्ञान की सहज और सटीक युक्ति से मात्र पलभर मे खुली आंखो से दर्शन दीदार कर सकते हैं। इसके इलावा प्रभु के दर्शन करने का कोई तौर तरीका नही है। अनाप-शनाप बाहरमुखि कर्मकांड करने से आप बंधन मे बंध जाते हो और जब तक आप बंधन मे हो तो मोक्ष मुक्ति के अधिकारी नही बन सकते। इसलिए इस अंनत को जानकर पहचान कर नित्यप्रति सुरत-शब्द योग का अभ्यास करते हुए अंनत हो जाओ, सदा सर्वदा मुक्त के साथ के साथ जुड़कर जीते जी हमेशा के लिए मुक्त हो जाओ। जो पूरा है और मुक्त है वही हमे भी परिपूर्ण और मुक्त कर सकता है। हमेशा रहने वाला स्थाई सुख-शांति और परम आत्म आनद तो अनंत से ही मिल सकता है। अध्यात्मिक ज्ञान और ध्यान चंचल और चलायमान मन के गुण, स्वभाव, प्रभाव, दिशा और दशा तथा अंदर-बाहर से रुपांतरण हो जाता है। महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ ने कहा कि समय के ब्रह्मज्ञानी सतगुरु से लिए हुए ज्ञान का तब तक लाभ नही होगा जब तक ब्रह्मज्ञान को उपयोग करने का तौर-तरीका पता नही होगा। ज्ञान लेने से जीवन मे ज्ञान को जीना बहुत ही जरुरी है।

सिर्फ ब्रह्मज्ञान की बातें करने से नही बल्कि ब्रह्मज्ञान को आचरण मे धारण करने और नित्यप्रति अभ्यास करने से मनुष्य जीवन का कल्याण होगा। मैं का तू हो जाना अर्थात बूंद का सागर मे समा जाना ही इस ओत-प्रोत जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार परमात्मा के साथ एकरूप हो जाना है। गाकर किसी ने प्रभु को नही पाया बल्कि पाकर गाया है। मीरा ने पहले पाया फिर गाया। परमात्मा के ज्ञान-ध्यान और पहचान के बिना संत महापुरुषों की रुहानी वाणियों को तरह-तरह की तर्ज़ पर गाने-बजाने और राग अलापने से जयादा फायदा नही होगा और आप बाहर मन तक ही सीमित रह जाओगे। उपनिषदों, पुराणों और वाणी के शलोकों को कंठस्थ करके और गाकर बजाकर वाचक ज्ञानी तो बन जाओगे परंतु ब्रह्मज्ञानी नही बन सकोगे। मृत्युलोक की यश-मान, कीर्ती, वाहा-वाही और माया तो मिल जाएगी, स्वार्थी लोग आगे-पीछे घूमेंगे, जै-जै कारे खूब लगेंगे परंतु जीवन वहीं खड़ा रहेगा जहां से यात्रा शुरु की थी। अगर ज्ञान और विवेक की दृष्टि से देखा जाए तो आज के पदार्थवाद और स्वार्थवाद के चलते दौर मे लोग भोले भाले लोगों से उनका मेहनत करके कमाया हुआ धन खूब बटोर रहे है। अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं। जाति, धर्म, वर्ण, मजहब, संप्रदाय, प्रतीक, चिन्ह, मनुष्य द्वारा

बनाए गए काल्पनिक भगवान, विधि-विधान, पूजा- पद्धतियां, बाहर मुखि अनाप-शनाप कर्मकांड, निरर्थक बहसबाजी, तरह-तरह की मूढ मान्यताएं, मन और मत-मतांतरों के भेदभाव, अपने श्रेष्ठ और दूसरों को नीचा दिखाने की प्रवृति और इधर-उधर से ली गई उधारी जानकारियों के आधार पर भोले-भाले लोगों का शोषण हो रहा है। आज धर्म नही धंधा बन गया है। लोगों का कहा जाता है कि माया का त्याग करो परंतु अपनी तिजोरी भरी जा रही है। ऐसे लोग अलीशान बंगलों मे रहकर ऐशोआराम का जीवन जी रहें है। अमूमन ऐसा देखा जाता है कि आज का मानव भारत की सत्यम, शिवम, सुंदरम संस्कृति, अच्छे संस्कारों, अच्छे विचारों, सतगुरु रहबरों के पदचिन्हों और मूलभूत सिद्धांतों को भूलता जा रहा और वास्तविकता से कोसों दूर चला गया है। मोक्ष-मुक्ति, सुख शांति और सुकून तो एक सपना बनकर रह गया है। इसीलिए मनुष्य जीवन मे स्थाई शांति, सुकुन आत्म आनंद और आत्मदर्शन प्राप्त करने के लिए पहले परमात्मा का ज्ञान, पहचान और फिर ध्यान बहुत जरुरी है। तब तक संघर्ष करो और करते ही रहो जब तक मंजिल नही मिलती। आओ आज ही संकल्प करे कि जीवन मे साधन नही साधना, बनावट, सजावट और दिखावट नही वास्तविकता, बाहरमुखि नही अंतर्मुखी साधना, कथनी नही करनी, बातें नही खुद का अनुभव होना अति जरुरी है तभी खुली अंर बंद आंखे करके परमात्मा का दर्शन दीदार होगा और मोक्ष मुक्ति का सपना साकार होगा।

अनाथ आश्रम के बच्चों के साथ मनाई साहित्यकार विजय विभोर जी की जयंती

गजब हरियाणा न्यूज

रोहतक । 29 अपैल 2023 को साहित्कार विजय 'विभोर' जी की जयंती अनाथ आश्रम के बच्चों के साथ मनाई गई। साहित्यकार विजय 'विभोर' जी की कई पुस्तकें व सांझा संकलन प्रकाशित हो चुकी हैं। विभोर जी हरियाणा साहित्य अकादमी से पुरस्कृत थे व अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित थे। विभोर जी बच्चों को बहुत चाहते थे व उनके साथ खुद भी बच्चा बन जाते थे इसलिए उनके परिवार ने उनकी उन्हीं यादों को याद रखते हुए आश्रम के बच्चों के साथ जयंती मनाने का निर्णय लिया। उनकी जयंती के अवसर पर आश्रम के बच्चों के लिए भोजन की व्यवथा कर विजय 'विभोर' जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आश्रम के बच्चों ने सबसे पहले अतिथि सम्मान किया फिर प्रार्थना की जिसमें सभी बच्चों की एक जैसी गूंज व लय आ रही थी तथा उसके बाद तालियों बजाई उनकी ताल भी एक जैसी ही थी जिसे सुनकर एक अलग ही खुशी का अहसास हो रहा था। इसके पश्चात् बच्चों ने भोजन ग्रहण किया परिवार के साथ आए बच्चों ने उनके साथ हाथ मिलाकर उनके साथ सुखद पल सहेजे। बच्चों ने अपने हाथों से सभी बच्चों को भोजन परोसा और फिर स्वयं भी भोजन उन्हीं के साथ किया। आश्रम के बच्चों का अनुशासन देख मन बहुत प्रसन्न हुआ। आश्रम का वातावरण बहुत खुला व हवादार था।

बच्चों को पढ़ाई के लिए स्कूलों में भी भेजा जाता है ऐसा वहाँ के प्रमुख से चर्चा करते समय उन्होंने हमें बताया। आश्रम की इतनी अच्छी व्यवस्थ बनाए रखने के लिए आश्रम के प्रमुख व उनकी पूरी टीम को साहित्यकार विजय 'विभोर' जी का परिवार तहेदिल से आभार व्यक्त करता है। साहित्यकार विजय 'विभोर' जी की जयंती पर उनकी पत्नी आशा विजय 'विभोर', बेटी तेजिस्वीनि, बेटा दीपांशु बाल्याण, सन्तोष, कीर्ति, वर्षा, लक्ष्मीनाराण, सुमन बाला, गौरी व आराध्या आदि मौजूद रहे।

12 वीं पास, देते हैं यूनिवर्सिटी में देते हैं लेक्चर

ये सज्जन करते हैं मोची का काम

यूनिवर्सिटियों में लैक्चर और इनके साहित्य पर हो रही है रिसर्च

गजब हरियाणा न्यूज

होशियारपुर । टांडा रोड के साथ लगते मुहल्ला सुभाष नगर के द्वारका भारती (75) 12 वें पास हैं। घर चलाने के लिए मोची का काम करते हैं। सुकून के लिए साहित्य रचते हैं। भले ही वे 12 वीं पास हैं, पर साहित्य की समझ के कारण उन्हें वर्दीवालों को लेक्चर देने में बुलाया जाता है। कई भाषाओं में साहित्यकार इनकी पुस्तकों का अनुवाद कर चुके हैं। इनकी स्वयं की लिखी कविता एकलव्य इग्नू में एमए के बच्चे पढ़ते हैं, वहीं पंजाब विश्वविद्यालय में 2 होस्टल इन उपन्यास मोची पर रिसर्च कर रहे हैं। वे कहते हैं कि जो व्यवसाय आपका भरण पोषण करे, वह इतना अधम हो ही नहीं सकता, जिसे करने में आपको शर्मिंदगी महसूस होगी।

द्वारका बोले- घर चलाने को गांठता हूँ जूते सुकून के लिए रचता हूँ साहित्य

सुभाष नगर में प्रवेश करते ही अपनी किराए की छोटी सी दुकान पर आज भी द्वारका भारती हाथों से नए नए जूते तैयार करते हैं। अक्सर उनकी दुकान के बाहर बड़े गाड़ियों में सवार साहित्य प्रेमी अधिकारियों और साहित्यकारों की पहुंचना और साहित्य पर चर्चा करना दिन का हिस्सा हैं। चर्चा के दौरान भी वह अपने काम से जी नहीं चुराते और पूरे मनोयोग से जूते गांठते रहते हैं। फुरसत के पलों में भारती दर्शन और कार्ल मार्क्स के अलावा पश्चिमी व लैटिन अमेरिकी साहित्य का अध्ययन करते हैं।

डॉ.सुरेन्द्र की लेखनी से साहित्य की प्रेरणा मिली

द्वारका भारती ने बताया कि 12 वीं तक पढ़ाई करने के बाद 1983 में होशियारपुर लौटे, तो वह अपने पुश्तैनी पेशे जूते गांठने में जुट गए। साहित्य से लगाव बचपन से था। डॉ.सुरेन्द्र अज्ञात की क्रांतिकारी लेखनी से प्रभावित हो उपन्यास जूठन का पंजाबी भाषा में अनुवाद

किया गया। उपन्यास को पहले ही साल बेस्ट सेलर उपन्यास का खिताब मिला। इसके बाद पंजाबी उपन्यास मशालची का अनुवाद किया गया। इस दौरान दलित दर्शन, हिंदुत्व के दुर्ग पुस्तक लेखन के साथ ही हंस, दिनमान, वागर्थ, शब्द के अलावा कविता, कहानी व निबंध भी लिखे।

द्वारका भारती कहते हैं कि आज भी समाज में बर्तन धोने और जूते तैयार करने वाले मोची के काम को लोग हीनता की दृष्टि से देखते हैं, जो नकारात्मक सोच को दर्शाता है। वह घर चलाने के लिए जूते तैयार करते हैं, वहीं मानसिक खुराक व सुकून के लिए साहित्य की रचना करते हैं। जूते गांठना हमारा पेशा है। इसी से मेरा घर व मेरा परिवार का भरण पोषण होता है।

बटालियन एनसीसी में परमाणु परीक्षण दिवस मनाया

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल । बटालियन एनसीसी करनाल के तत्वावधान में परमाणु परीक्षण दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर एस.के.वैद्य एवं 7 हरियाणा बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल नरेश आर्य, एडम ऑफिसर कर्नल हरमन निक्सन ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर एस के वैद्य ने प्रदर्शनी का निरीक्षण किया और कहा कि परमाणु परीक्षण से भारत देश आज गौरव की अनुभूति कर रहा है। इस अवसर पर बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल नरेश आर्य ने बताया साल 1998, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने आज ही के दिन राजस्थान के पोखरण में परमाणु परीक्षण कर दुनिया को चौंका दिया था। अचानक किए गए इन परमाणु परीक्षणों से अमेरिका, पाकिस्तान समेत कई देश दंग रह गए थे। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की अगुआई में यह मिशन कुछ इस तरह से अंजाम दिया गया कि अमेरिका समेत पूरी दुनिया को इसकी भनक तक नहीं लगी। इससे पहले 1974 में इंदिरा गांधी की सरकार ने पहला परमाणु परीक्षण (पोखरण-1) कर दुनिया को भारत की ताकत का लोहा मनवाया था, इसे ऑपरेशन 'स्माइलिंग बुद्धा' नाम दिया गया था। जिसमें दयाल सिंह पब्लिक स्कूल, मेन ब्रांच, सेक्टर 7, एसबीएस पब्लिक स्कूल, अकादमी असंध, जे पी एस अकादमी असंध, निशान पब्लिक स्कूल, कान्वेंट स्कूल एवं अन्य विद्यालयों के एनसीसी कैडेट्स ने पोस्टर मेकिंग, भाषण एवम् प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

इस अवसर पर कैप्टन संदीप देसवाल, लेफ्टिनेंट देवी भूषण शर्मा, मेजर अनीता जून, एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर डॉ. केवल कृष्ण, हितेश गुप्ता, रविंद्र यादव, सुदेश, कंवल जोत, अमित कुमार आदि उपस्थित रहे।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा ढिंगरा प्रिंटिंग प्रैस, अग्रसैन चौंक, मोहन नगर, कुरुक्षेत्र से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं0 890 पी, सैक्टर-4, अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (91382-03233) Registration Namber : HAR/HIN/2018/77311